प्रस्तावना.



जीववीचार शीखनारने अनुकूळ तेमज सुगम थाय ते माटे वीस्तारपुर्वक तेना अर्थो समजाववामां आवेल छे. अमारी दरेक आवृतीमां अमो यथामतिने सुधारा वधारा करता रह्या छीए तथा आ नवमी आवृतीमां पण घणा सुधारा करवामां आवेल छे. केटला मुनि महाराजोनी आज्ञाथी दरेक गाथानी छाया पण आपवामां आवेल छे.

आ पुस्तकमां अल्पमतिना तथा अज्ञानताना दोषथी जे कांइ अशुद्धता विद्वानोना जोवामां आवे ते साहेबोए अमारापर सुजनपणानो भाव राखी तेवा पाठोने सुधारी वांचवा अने भणाववा. भणाववाना उद्यम करवामां उत्सुक थती वेळाए ग्रंथ प्रकाशक के मुद्रकनी भूलनी अवगणना न

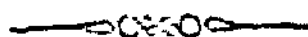
करतां सुधारीने तेओ पोतेज पाठनो जेवो उच्चार करे छे अने करावे छे एवी जे पंडीत पुरुपोनी स्वभावीक प्रकृति होय छे, ते मुजब आ दोपोने पण दूर करशे. अमारी भूल संबंधी अत्रे अमे तेमनी साथे "मिच्छामि दकडं" दइए छीए. सुज्ञेपु किं वहुना.

ली०,

प्रकाशक.

॥ ॐ श्री गौतमाय नमः ॥

॥ जीवविचार प्रकरण प्रारंभः ॥



प्रथम ग्रंथकर्ता श्रीशांतिसूरि आयमां मंगलाचरण करतां प्रयोजनादिकनुं सूचन करे छे–

॥ आर्यावृत्तं ॥

भुवनपईवं वीरं, नमिऊण भणामि अबुहबोहत्थं ॥ जीवसरूवं किंचिवि, जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ १ ॥

छाया–भुवनप्रदीपं वीरं, नत्वा भणामि–अबुधबोधार्थम् ॥
जीवस्वरूपं किंचिदपि, यथा भणितं पूर्वसूरिभिः ॥१॥

गाथा १ लीना छूटा शब्दना अर्थ.

भुवण–त्रण भुवनने विषे.
पईवं–प्रदीप (समान).
वीरं–महावीरस्वामीने
नमिऊण–नमस्कार करीने.
भणामि–कहुं छुं.
अबुह–(तत्वविचारने विषे) अज्ञानीने.

बोहत्थं–बोध थवाने अर्थे.
जीवसरूवं–जीवनुं स्वरूप.
किंचिवि–लेशमात्र.
जह–जेम, जेवी रीते.
भणियं–कह्युं छे.
पुव्व–पूर्वना.
सूरीहिं–सूरिओए

अर्थः–(भुवण के०) त्रण भुवन, एटले चतुर्दश रज्ज्वात्मक जे लोक, तेने विषे (पईवं के०) प्रदीप समान अने सकल पापने दूर करनारा एवा (वीरं के०) श्रीमहावीरस्वामीने (नमिऊण के०) नमस्कार करीने (जह के०) जेम (पुव्वसूरिहिं के०) सुधर्मस्वाम्यादिक पूर्वसूरिओए (भणियं के०) पोताना आगममां प्रगट कर्युं छे, तेम हुं पण (अबुहबोहत्थं के०) तत्त्वविचारने विषे अज्ञानी जीवोने बोध थवाने अर्थे (किंचिवि के०) लेशमात्र (जीवसरूवं के०) जीवनुं स्वरूप (भणामि के०) कहुं छुं ॥ १ ॥

हवे जीवना भेद कही बतावे छे—

जीवा मुत्ता संसा,–रिणो अ तस थावरा

ञ्च संसारी ॥ पुढविजलजलणवाऊ,-वण-स्सई थावरा नेआ ॥ २ ॥

छाया-जीवा मुक्ताः संसा,-रिणश्च त्रसाःस्थावराश्च संसारिणः॥
पृथिवीजलज्वलनवायु,-वनस्पतयः स्थावरा ज्ञेयाः॥२॥

गाथा २ जीना छूटा शब्दना अर्थ.

जीवा-जीव.	पुढवि-पृथ्वीकाय.
मुत्ता-मुक्ति पामेला, मुक्त.	जल-अप्काय.
संसारिणो-संसारी.	जलण-तेउकाय.
अ-तथा.	वाऊ-वायुकाय.
तस-त्रस (हाले चाले ते).	वणस्सई-वनस्पतिकाय.
थावरा-स्थावर (स्थिर रहे ते).	स्थावरा-स्थावर.
संसारी-संसारी.	नेआ-जाणवा,

अर्थः-(जीवा के०) जीव, ते एक मुक्तिना तथा बीजा संसारी, ए बे प्रकारना छे. तेउंमांना (मुत्ता के०) जेउं सकल कर्मरूप पटलोनो क्षय करीने मुक्तिपदने पाम्या छे, तेउं मुक्त एटले सिद्ध जीवो कहेवायछे; (अ के०) तथा (संसा-

रिणो के०) जेमां संसृतिने पमाय ठे, ते संसार कहेवाय ठे, एवा संसारमां एटले नरकादि चार गतिउमां जेउ च्रमण करे ठे, तेउ संसारी जीवो कहेवाय ठे. ते (संसारी के०) संसारी जीव एक (तस के०) त्रस (अ के०) वली बीजा (थावरा के०) स्थावर, ए वे प्रकारे ठे; तेउमांना स्थावर जीवोना पांच प्रकार ठे, ते आ प्रमाणे–एक (पुढवि के०) पृथ्वीकाय, बीजा (जल के०) पाणी ते अप्काय, त्रीजा (जलण के०) ज्वलन ते अग्निकाय, चोथा (वाऊ के०) वायुकाय, पांचमा (वणस्सई के०) वनस्पतिकाय, एवी रीते ए (थावरा के०) स्थावर जीवो पांच प्रकारना (नेआ के०) जाणवा ॥ २ ॥

हवे ए स्थावर जीवोना नेदमां अनुक्रमे प्राप्त थयेला पृथ्वीकाय जीवोना नेद कहे ठे–

फलिहमणिरयणविद्रुम,–हिंगुलहरिया-

समणसिलरसिंदा ॥ कणगाइधाउसेढी,-
वन्निअअ रणेट्टयपलेवा ॥३॥ अब्भयतूरी-
ऊसं, मट्टीपाहाणजाइओ णेगा ॥ सोवी-
रंजण लूणा,-इ पुढविभेआइ इच्चाई ॥४॥

छाया-स्फटिकमणिरत्नविद्रुम,-हिंगुलहरितालमनःशिलार-
सेंद्राः ॥
कनकादिधातुखटिका,-वर्णिकाऽरणेट्टकपलेवाः ॥३॥
अभ्रकतूरी-ऊषं, मृत्तिकापाषाणजातयोऽनेकाः ॥
सौवीरांजनं लवणादि, पृथिवीभेदा इत्यादयः ॥ ४ ॥

गाथा ३ जीना छूटा शब्दना अर्थ.

फलिह-स्फटिक रत्न.
मणि-चंद्रकांतादिक मणि
रयण-रत्न.
विद्दुम-परवालां
हिंगुल-हिंगळो.
हरियाल-हडताल.
मणसिल-मणसिल.
रसिंदा-पारो.
कणगाइ-कनकादि (सोनुं विगेरे).
धाउ-धातु.
सेढी-खडी माटी, चाक.
वन्नीअ-लाल रंगनी माटी, हरमजी.
अरणेट्टय-पाषाणना कटका-नी साथे मळेली धोळी माटी.
पलेवा-एक जातिनो पाषाण.

गाथा ४ थीना छूटा शब्दना अर्थ.

अब्भय-अब्भरख (पांच वर्णनो)
तुरी-एक जातिनी माटी.
ऊस-खारो.
मट्टी-माटी.
पाहाण-पाषाण, पत्थर.
जाइओ-जातिओ.
णेगा-अनेक.
सोवीरंजण-सुरमो.
लूणाइ-सिंधव विगेरे.
पुढवि-पृथ्वीकायना.
भेआइ-भेदो.
इच्चाई-इत्यादि.

अर्थः-(फलिह के०) स्फटिक प्रसिद्ध
(मणि के०) मणि, ते चंद्रकांतादिक अ
ते समुद्रमां उत्पन्न थाय ठे ते, तथा (रयण
रत्न, ते वज्र कर्केतनादिक अथवा जे खाण
त्पन्न थाय ठे ते (विद्रुम के०) विद्रुम परवलां,
के०) हिंगलो, (हरियाल के०) हरताल.
सिल के०) मणसिल, (रसिंदा के०) पारो,
गाइ धाउ के०) कनगादि धातु सात
रुपुं, त्रांबु, कथीर, जसत, सीसुं तथा
अग्निसंयोगना अनावे पृथ्वीकाय ठे, अ

संयोगे तेउकाय छे, (सेढी के०) खडी माटी अथवा चाक कहेवाय छे ते, (वन्निअ के०) हरमजी अथवा लाल रंगनी माटी थाय छे ते, (अरणेट्टय के०) पाषाणना कटकानी साथे मळेली धोळी माटी थाय छे ते, तथा (पलेवा के०) ए एक जातिनो पाषाण छे ॥३॥ (अब्भय के०) पांच वर्णनो अबरख, ते सोनी लोकोने सोनुं तपाववाना उपयोगमां आवे छे, अथवा वैद्य लोको एनी भस्म विगेरे करीने ओषधिमां कामे लगाडे छे, (तूरी के०) एक जातिनी माटी छे, ते कापडने पाश देवाना काममां आवे छे, (ऊसं के०) ए पण एक जातिनी माटीज छे, पण क्षार भूमिमां उत्पन्न थवाथी क्षार अथवा खारो ए नामे ओळखाय छे. एवी रीते (मट्टी के०) माटी अने (पाहाण के०) पाषाण, ए बे पदार्थोनी काळी, नीली, राती, पीळी अने धोळी एवी (जाइओ

(हरितणू के०) उगेला घास प्रमुख वनस्पतिना मोर अथवा झाम प्रमुखनां पांदडांने छेडे जे पाणीनां बिंदु थाय छे, ते हरितनु कहेवाय छे, (महिआ के०) आकाशने विषे कोइ समये वादलां थइ आवे छे-तेना योगे अति सूक्ष्म झीणी झीणी पाणीनी बुंदो पडे छे, ते महिका अथवा धुमरीनुं पाणी कहेवाय छे, एवी रीते (घणोदहि माई के०) जेने आधारे पृथ्वी रही छे, ते पृथ्वी पर्यंत पाणीना पिंडरूप घणोदधि आदि दइने बीजा पण (आउस्स के०) अप्कायना (नेआ णेगा के०) अनेक नेदो (हुंति के०) थाय छे. ए अप्काय जीवोना नेद कह्या ॥ ५ ॥

हवे तेउकाय जीवोना नेद कहे छे–

इंगाल जालमुम्मुर,---उक्कासणिकणग-
विज्जुमाईआ ॥ अगणिजिआणं नेआ,
नायवा निउणवुद्धीए ॥ ६ ॥

छाया-अंगार-ज्वाला-मुर्मुर,-उल्कानिकनक-विद्युदादयः ॥
अग्निजीवानां भेदा, ज्ञातव्या निपुणबुद्ध्याः ॥ ६ ॥

गाथा ६ ठीना जुदा शब्दना अर्थ.

इंगाल-अंगारानो अग्नि.
जाल-ज्वालानो अग्नि.
मुम्मुर-भ्रासढि, भाठो.
उक्का-उल्कापातनो अग्नि.
असणि-वज्रनो मार मारतां पडतो अग्नि.
कणग-कणियानो अग्नि.
विज्जु-वीजली.
आइआ-आदि.
अगणि-अग्निकाय.
जिआणं-जीवोना.
भेआ-भेदो.
नायव्वा-जाणवा.
निउण-निपुण, सूक्ष्म.
बुद्धिए-बुद्धीए करी.

अर्थः—(इंगाल के०) ज्वाला विनानो अग्नि, काष्ठ प्रमुख वस्तुनुं सत्व ज्यारे बली जाय छे, त्यारे अग्निनी ज्वालानो नाश थइ जाय छे, अने रक्त रत्ननी पेठे चकचकित फटका थइ रहे छे, ते अंगार कहेवाय छे, (जाल के०) ज्वालानो अग्नि, (मुम्मुर के०) अग्निनी ज्वालामांथी जे सूक्ष्म कण नीकले, ते भ्रासढि अथवा भाठो कहेवाय छे,

(उक्का के०) कोइक कालने विषे आकाशमांथी
अग्निनी वृष्टि थाय छे, ते उल्कापातनो अग्नि
कहेवाय छे, (असणि के०) वज्रनो मार मारतां
तेमांथी अग्नि पडे छे, ते अशनि कहेवाय छे,
(कणग के०) कोइक कालने विषे आकाशमां
अग्निना तणखा उडता देखाय छे, ते कनक
एटले कणिआनो अग्नि कहेवाय छे, (विज्जुमा
ईआ के०) विजली आदिक ते वर्षाऋतुमां तथ
बीजी कोइ पण ऋतुमां ज्यारे मावठुं थाय छे
त्यारे कोइ वखते आकाशथी विजली पृथ्वी
उपर पडे छे, ते विद्युत्पात कहेवाय छे, आदि
शब्दे करी वांसना घसाराथी उत्पन्न थएला तथ
सूर्यकांतमणि उपर सूर्यना किरणो पडतां उत्पन्न
थएलो अग्नि पण जाणवो. इत्यादि (अगणि
जिआणं के०) अग्निकाय संसारी जीवोने
(नेआ के०) जेओ ते (निउणबुद्धिए के०
निपुण एटले सूक्ष्म बुद्धिए करी (नायव्वा के०

जाणवा योग्य छे ॥ ६ ॥

हवे वायुकाय जीवोना भेद कहे छे–

उब्भामगउक्कलिआ, मंडलिमहसुद्धगुंजवाया य ॥ घणतणुवायाईया, भेया खलु वाउकायस्स ॥ ७ ॥

छाया-उद्भ्रामकोत्कलिको, मंडलिमहा (मुख) शुद्धगुंजवाताश्च॥
घनतनुवातादिका, भेदाः खलु वायुकायस्य ॥ ७ ॥

गाथा ७ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

उब्भामग–उद्भ्रामक एटले उंचे भमावे तेवो वायु.
उक्कलिआ–उत्कलिक एटले नीचो पडतो वायु.
मंडली–वंटोलीऊ, मंडलीक.
मह–महावायु
पाठांतरे मुह–मुखवात.
सुद्ध–शुद्धवायु.
गुंजवाया–गुंजारव करतो वायु.
य–वळी
घणतणुवाया–घनवायु अने तनुवायु.
आईया–आदिक.
भेया–भेदो.
खलु–निश्चे.
वाउकायस्स–वाउकायना.

---

१ पाठांतरे 'मुह'

अर्थः—(उब्भामग के०) उंचो आकाशने विषे जे वायु तृणादिकना ढेराने नमावे छे. अथवा बाहेर रहेला तृणादिकने विवक्षित क्षेत्रनी अंदर फेंकी दे छे, ते उब्भामक अथवा बीजे नामे संवर्तक वायरो कहेवाय, (उक्कलिआ के०) जे वायु नीचो पडतो होय, अथवा रही रहीने वाय ते उत्कलिक वायु कहेवाय छे, (मह के०) कोइ वार मोटो वायरो थाय ते महावायु, पाठांतरमां (मुह के०) मुखनो वायु. (सुद्ध के०) जे [1]शनैः शनैः वाय, ते शुद्धवायु, (गुंजवाया य के०) जे गुंजारव करे, ते गुंजवायु कहेवाय छे, अने (घणतणुवाया के०) जे बे वायुने आधारे नरक देवलोकादि रहेलां छे, ते एक तथा बीजो तनुवायु कहेवाय छे, तेमां घनवात शिशिर ऋतुमां जामेला कठण घी सरखो अने तनुवात प्रवाही घी सरखो छे, तथा ते बन्ने

१ धीमे धीमे

असंख्यातयोजन प्रमाणवाळा छे. (आठमा केट) इत्यादिक (बहु केट) निश्चे करी (वाटकावत्त केट) वाउकाय जैनाथी जीवोना (जेवा केट) भेदो जाणवा. ए प्रमाणे ७ गाथाए करी पृथिवी, अप् तेउ (अग्नि) तथा वाउकायना भेद कह्या ॥ ७ ॥

हवे वनस्पतिकायना भेद कहे छे—

साहारणपत्तेआ. वणस्सइजीवा दुहा
सुए भणिआ॥ जेसिमणंताणं तणू, एगा-
साहारणा ते उ ॥ ८ ॥

साधारण-प्रत्येका. वनस्पतिजीवा द्विधा श्रुते भणिताः
येषामनन्तानां तनुरेका साधारणास्ते तु ॥ ८ ॥

गाथा ८ मीना शब्दना अर्थ.

साहारण—साधारण.	दुहा—बे प्रकारना
पत्तेआ—प्रत्येक.	सुए—सिद्धांतने विषे.
वणस्सइ—वनस्पतिकाय.	भणिआ—कह्या छे.
जीवा—जीवो.	जेसिं—जेओनुं.

अणंताणं–अनंत जीवोनुं.	साहारण–साधारण.
तणु–शरीर.	ते–ते.
एगा–एक.	उ–तो.

अर्थः—(वणसइजीवा के०) वनस्पतिकाय जीवो ते एक (साहारण के०) साधारण अने वीजा (पत्तेआ के०) प्रत्येक, ए (दुहा के०) वे प्रकारना (सुए के०) सिद्धांतने विषे (जणिआ के०) कहेला छे. तेउमां (जेसिमणंताणं के०) जे अनंत काय जीवोनुं (तणु एगा के०) एक शरीर होय, (ते उ के०) ते तो (साहारण के०) साधारण वनस्पतिकाय जीवो जाणवा; जेओनुं साथे नीकळवुं थाय, साथे शरीर उपजे, साथे आहारनुं ग्रहण थाय साथेज श्वासोश्वास चाले, एकनुं ग्रहण ते सर्वनुं अने सर्वनुं ग्रहण ते एकनुं पण थाय, ए रीते आहार, आन, प्राण अने ग्रहण साधारण होय, ते लक्षणवडे साधारण वनस्पतिकाय जीवो जाणवा. तथा ते साधा-

रण वनस्पतिकाय जीवो पण बे प्रकारे छे, एक सूक्ष्मसाधारण अने बीजा बादरसाधारण, सिद्धांतमां साधारणनुं निगोद नाम आवेलुं छे. ते सुक्ष्मनिगोदनुं स्वरूप संग्रहणीमां कह्युं छे. ते आगम प्रमाणे कांइक कहेवाय छे–निगोदिया जीव सांव्यवहारिक अने असांव्यवहारिक, एम बे भेदे छे, तेमां अनादि सूक्ष्मनिगोदथी नीकळीने सर्व स्थानकोमां उपजे, ते पृथिव्यादि विविध व्यवहारना योगथी सांव्यवहारिक कहेवाय छे, अने जे अनादि कालथी सूक्ष्मनिगोदमांज रहे छे, ते तेवा प्रकारना व्यवहाररहितपणाथी असांव्यवहारिक कहेवाय छे. सांव्यवहारिक राशिमांथी जेटला सिद्ध थाय, तेटला पाछा तेमां असांव्यवहारिक राशि (अनादि वनस्पतिनी राशिमां) थी आवे छे. वळी सांव्यवहारिक सूक्ष्मनिगोमांथी नीकळी बीजा सर्व स्थानमां उपजे त्यांथी पण नीकळी केटलाएक

फरी पाछा ते निगोदमांज जाय छे, त्यां पण तेओ एक वार पण व्यवहारमां पडवाथी सांव्य· वहारिकज कहेवाय छे. त्यां उत्कृष्ट स्थिति असंख्याता उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी जघन्य अंतर्मुहूर्त जाणवी. बादर निगोदनी कायस्थिति तो सीत्तेर कोटा कोटी सागरोपम जाणवी. तथा सामान्य निगोदनी स्थिति तो अढी क्षेत्र पुद्गल परावर्त जाणवी. ॥ ८ ॥

हवे बे गाथाए करी ए साधारण वनस्पतिकाय जीवोना भेद कहे छे—

कंदाअंकुरकिसलय,-पणगा सेवालभू-
मिफोडा अ ॥ [1]अल्लयतियगज्जरमो,—त्थवत्थु-
लाथेगपल्लंका ॥९॥ कोमलफलं च सव्वं,
गूढसिराइं सिणाइ पत्ताइं ॥ थोहरिकुंआरि-
गुग्गुलि,-गलोयपमुहाइ छिन्नरुहा ॥१०॥

---

१ अद्दयतिग

गाथा—कन्दा अङ्कुरकिसलयपनकाशेवालभूमिस्फोटाश्च ।
आर्द्रकत्रिकगर्जरमुस्तावास्तुगथेगपल्यंकाः ॥९॥
कोमलफले च सर्वं गूढशिराणि शणादिपत्राणि ।
स्नुहीकुमारीगुग्गुलिगुडूचीप्रमुखाणि छिन्नरुहाणि ॥१०॥

गाथा ९ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

कंदा-कंद.
अंकुर-अंकुर, कोंटा,
किसलय-कुंपलो, फणगा.
पणगा-पांच वर्णनो फुगी
सेवाळ-सेवाल, लील.
भूमिफोडा-बिलाडोना टोप.
अ-वळी.
अल्लयतिय-आर्द्रकत्रिक (लीलुं आदु, लीली हलदर अने लीलो कचुरो)
गज्जर-गाजर.
मोत्थ-मोथ.
वत्थुला-ए नामे शाकविशेष.
थेग-थ मूरा, थेगी.
पल्लंका-ए नामे शाक विशेष.

गाथा १० मीना छूटा शब्दना अर्थ.

कोमळ-कोमल, जेमां बीज न थयां होय ते.
फलं-फल.
सव्वं-सर्व.
गूढ-छानी.
सिराइं-संधीवाळां.
सिणाइ-शणादि.
पत्ताइं-पांदडां.
थोहरि-सर्व जातनो थोर.
कुंआरि-कुंवार.
गुग्गुलि-गुगल.
गलोय-गलो, गड़.
पमुहाइ-प्रमुख.
आइ-आदि.
छिन्नरुहा-छेद्यां थकां वाव्याथी फरी उगे ते.

अर्थः—(कंदा के०) सुरणादि सर्व जातना अशुष्क-लीला (शुकेला निर्जीवपणाथी अनंतकाय न गणाय) कंद, (अंकुर के०) वहार नीकळती वेलाए जेना पत्रादि अवयवो प्रगट न देखाय एवा घोपातकी, केरडा, वरुण, वट, नींब विगेरे वृक्षोना अंकुरा, (किसलय के०) सर्व जातिनां कुंपल नवा टसा फुटे ते, पांदडां जाणवां. (पणग के०) पांच वर्णनी फुगी, (सेवाल के०) जे पाणीनी अंदर रंग रंगनी लील थाय छे ते, (भूमिफोडा के०) वर्षाकालमां छत्रने आकारे पृथ्वीमांथी नीकळे छे ते. ते बिलाडीना टोप एवे नामे ओळखाय छे. (अ के०) वळी (अल्लयतिय के०) आर्डकत्रिक एटले लीलुं आदु, लीली हलदर तथा लीलो कचुरो, (गज्जर के०) गाजर, (मोह के०) मोथ. (वत्थुला के०) वथुलो नामे शाक विशेष, (थेग के०) थामुरा, थेगी, (पल्लंका के०) ए नामनुं शाक विशेष ते, एने लोको पाल-

खुं कहे छे ॥ए॥ (च के०) वली (कोमल फलं सव्वं के०) सर्व कोमल फल एटले जेमां बीज थयां न होय एवां आंबा विगेरेनां फलो अने (गूढसिराई के०) जेनी नसो अथवा सांध स्पष्ट देखाती न होय त्यांसुधी ते अनंतकाय जाणवां. ते तथा जेनो कणसलो अथवा पोंक ठानो होय, एटले जेना कण पाधरा देखाता न होय ते पण अनंतकाय जाणवा. ते (सिणाइ पत्ताइं के०) शणादिकनां पांदमां, आदि शब्दे करी जारनां पांदमां पण लेवां. (थोहरि के०) थोहरनी सर्व जाति, एमां कांटालो तथा खुरसाणी पण जाणवो. (कुंआरी के०) कुंआर थाय छे, ते लोकमां प्रसिद्ध छे. एने घरमां ऊंची टांगी होय, तोपण सूकाती नथी, किंतु एना नवा मार नीकलता जाय छे. (गुग्गुलि के०) गुगल प्रसिद्ध छे. (गलोयपमुहा के०) वली गडुची

प्रमुख एने गळु के गळो पण कहे छे, ए वल्लीने आकारे थाय छे, ए ज्वरादिक मटाडवानी ओषधि विशेष छे. (आइ के०) ए आदे दइने बीजां पण सर्वे जे (छिन्नरुहा के०) छेद्यां थकां पण वाव्याथी फरीने उगे, ते सर्वे साधारण वनस्पति अथवा अनंतकाय कहीए ॥ १० ॥

हवे अनंतकाय बत्रीशज छे? के एथी पण अधिक छे ? ते संदेह टाळवा माटे सूत्रकार गाथावडे कहे छे—

इच्चाइणो अणेगे, हवंति भेया अणंतकायाणं ॥ तेसिं परिजाणणठं, लक्खणमेयं सुए भणियं ॥ ११ ॥

छाया—इत्यादयोऽनेके, भवंति भेदा अनंतकायानाम् ॥
तेषां परिज्ञानार्थं, लक्षणमेतत्—छ्रुते भणितम् ॥ ११ ॥

ગાથા ૧૧ મીના છૂટા શબ્દના અર્થ.

इच्चाइणो-इत्यादिक.
अणेगे-अनेक.
हवंति-होय छे
भेया-भेदो.
अणंतकायाणं-अनंतकायना.
तेसिं-तेमने.

परि-सारी रीते समस्त प्रकारे
जाणणत्थं-जाणवाने अर्थे.
लक्खणं-लक्षण.
एयं-आ.
सुए-श्रुतने विषे.
भणियं-कहेलुं छे.

અર્થઃ—(ઇચ્ચાઇણો કે૦) ઇત્યાદિક (અણંતકાયાણં કે૦) અનંતકાય જીવોના (પિંડ, કચૂર તથા ગિરિકર્ણિકાદિક) (અણેગે કે૦) અનેક (ભેયા કે૦) ભેદો (હવંતિ કે૦) હોય છે, આર્ય દેશમાં પ્રસિદ્ધ અને અતિ વપરાતા હોવાથી સિદ્ધાંતમાં બત્રીશજ ગણાવ્યા છે, બીજા અપ્રસિદ્ધ અને નિરુપયોગી હોવાથી બતાવ્યા નથી. (તેસિં કે૦) તે અનંતકાય જીવોને (પરિજાણણત્થં કે૦) સારી રીતે જાણવાને અર્થે (એયં કે૦) આ વક્ષ્યમાણ એટલે જે આગળ કહેશે, તે (લક્ખણં

के०) लक्षण (सुए के०) श्रुतने विषे (जणियं के०) कहेलुं छे ॥ ११ ॥

हवे अनंतकाय वनस्पतिजीवोनुं लक्षण कही बतावे छे.

गूढसिरसंधिपव्वं, समभंगमही(रगं)रुगं च छिन्नरुहं ॥ साहारणं सरीरं, तव्विवरीअं च पत्तेयं ॥ १२ ॥

छाया–गूढशिरासंधिपर्व;–समभंगमहीरकं च छिन्नरुहम् ॥ साधारणं शरीरं, तद्विपरीतं च प्रत्येकम् ॥ १२ ॥

गाथा १२ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

गूढ–छानां.
सिर–नसो.
संधि–सांधा.
पव्वं–गांठो.
समभंगं–भाग्याथी जेनां सरखां बे फाडियां थइ शकतां होय
अहीरुगं–तांतणा विनानुं.
छिन्नरुहं–छेदीने वाव्याथी फरीने उगे ते.
साहारणं–साधारण.
सरीरं–शरीर.
तव्विवरीअं–ते थकी विपरीत लक्षणवालो.
पत्तेयं–प्रत्येक वनस्पतिकाय.

अर्थः-(सिर के०) नसो, (संधि के०) सांधाउं, (पव्वं के०) पर्व अथवा गांठा; ए अगे कायनां पत्र, दंड, नाल अने शाख विगेरेनां (गुढ के०) गुप्त ठानां होय एटले दीठामां न आवतां होय, अने (समभंगं के०) भांग्याथी जेनां सरखां बे फाडियां थइ शकतां होय, (अहीरुगं के०) तंतु-रहित, जेमां तांतणा होय नहीं, (च के०) पुनः एटले वली (छिन्नरुहं के०) जे छेदीने शुष्क थएलुं होय, अने फरी वावीए तो जलादि सामग्री पामी गळो विगेरेनी माफक उगे, ए सर्व प्रकारे (साहारणं सरीरं के०) साधारण शरीर जाणवुं, अने एज अनंतकाय पण कहेवाय छे. (तव्विवरीअं के०) तेथकी विपरीत लक्षणवाली वनस्पतिनुं (पत्तेयं के०) प्रत्येक शरीर जाणवुं. तथा शास्त्रमां बीजुं पण लक्षण आ प्रमाणे कह्युं छे. चक्रनी माफक भांगतां जेनी गांठो चूर्णथी भरेली होय, ते पृथ्वी सरखा भेदवाळुं अनंतकाय कहेवाय छे. ॥ १२ ॥

हवे प्रत्येक वनस्पतिनुं लक्षण ने जीवो शरीरना कया कया भागोमां होय, ते प्रगट करतां कहे छे–

एगसरीरे एगो, जीवो जेसिं तु ते य पत्तेया ॥ फलफूलछल्लिकठ्ठा, मूलग पत्ताणि बीयाणि ॥ १३ ॥

छाया–एकशरीर एको, जीवो येषां तु ताः प्रत्येकाः ॥
फलपुष्पत्वक्काष्ठानि, मूलानि पत्राणि बीजानि ॥१३॥

गाथा १३ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

एग–एक.
सरीरे–शरीरने विषे.
एगो–एक.
जीवो–जीव.
जेसिं–जे (वनस्पति) ने.
तु–ज.
ते–ते.
य–अने.
पत्तेया–प्रत्येक (वनस्पतिकाय.)

फल–फल.
फूल–फूल.
छल्लि–छाल.
कट्ठा–काष्ठ, लाकडुं.
मूलग–मूल.
पत्ताणि–पांदडां.
बीयाणि–बीज

अर्थः—(एगसरीरे के०) एक शरीरने विषे (एगो जीवो के०) एक जीव (जेसिं के०) जे वनस्पतिने विषे होय (तु ते य पत्तेया के०) तेनेज प्रत्येक वनस्पतिकाय कहीए. ए सामान्य लक्षण कह्युं, हवे विशेष लक्षण कहे छे. ए प्रत्येक वनस्पतिकायनां सात स्थान छे, ते आ प्रमाणे–(फल के०) सर्व प्रकारनां फल, (फूल के०) सर्व प्रकारनां फूलो, (छल्लि के०) उपरनी त्वचा एटले छाल, (कठा के०) सर्व प्रकारनुं काष्ट एटले लाकडुं,(मूलग के०) जेंय तलीयानुं थरू, (पत्ताणि के०) सर्व जातिनां पांदडां; (बीयाणि के०) सर्व बीज; ए सात स्थानक प्रत्ये भिन्न भिन्न जीव-रूप होवाथी एउने प्रत्येक वनस्पतिकाय कहीए. सूत्रकारे प्रत्येक वनस्पतिकायनां नामज बताव्या छे. विशेष नथी बताव्यो, तो पण ते नाम मात्रनो भेद देखाडे छे–१ वृक्ष, २ गुच्छ, ३ गुल्म, ४ लता, ५ वल्ली, ६ पर्वग, ७ तृण, ८ वनलता,

९ हरित, १० औषधि, ११ जलरुह, १२ कुहण;
ए बार प्रकारे प्रत्येक वनस्पतिकाय छे. ते संबंधी
विस्तरार्थ प्रज्ञापना विगेरेथी जाणवो
एवी रीते ए बादर पृथिव्यादिक पांचे स्थावरना
भेद विवरीने कह्या ॥ १३ ॥

हवे सर्व एकेंद्रिय आश्रीने पृथ्वी विगेरे पण
केवा अने क्यां क्यां होय ? तेनो भेद देखाडत
पांचे सूक्ष्म स्थावरनुं वर्णन करे छे–

पत्तेयं तरु मुत्तुं, पंचवि पुढवाइणो स
यललोए ॥ सुहुमा हवंति नियमा, अंत
मुहुत्ताउ अदिस्सा ॥ १४ ॥

छाया–प्रत्येकतरुं मुक्त्वा, पंचापि पृथ्व्यादयः सकललोके ॥
सूक्ष्मा भवंति नियमा,–अन्तर्मुहूर्तायुषोऽदृश्याः ॥१४॥

गाथा १४ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

पत्तेयंतरुं-प्रत्येक वनस्पतिकाय.	सुहुमा-सूक्ष्म.
मुत्तुं-मूकीने.	हवंति-होय छे.
पंचवि-पांचे.	नियमा-निश्चये करी.
पुढवाइणो-पृथिव्यादिक.	अंतमुहुत्त-अंतर्मुहूर्त.
सयल-सकल.	आउ-आयुष्यवाळा.
लोए-(चौद राज) लोकने विषे.	अदिस्सा-अदृश्य(चर्मदृष्टिए) देखाय नहीं तेवा.

अर्थः—(पत्तेयतरुं मुत्तु के०) ए पूर्वोक्त प्रत्येक वनस्पतिकाय मूकीने (पंचवि पुढवाइणो के०) पांचे पृथिव्यादिक (सयललोए के०) सकल चौद राजलोकने विषे (सुहुमा के०) सूक्ष्मनामकर्मना उदयथी सूक्ष्म एकेंद्रिय (हवंति के०) होय छे, (नियमा के०) निश्चये करी.एने पांच स्थावर कहीए. ते (अंतमुहुत्ताउ के०) [1]अंतर्मुहूर्त्तना आयुष्यवाला होय छे, ने (अदिस्सा के०) अदृश्य होय छे, एटले केवलीने ज्ञानगम्य होय, अने छद्मस्थने चर्मदृष्टिए देखाय नहीं. तेथीज ए सूक्ष्म कहेवाय छे ॥ १४ ॥

१ नव समयथी उपर एक समय जेमां ओछो होय, एवी बे घडी, ते अन्तर्मुहूर्त कहेवाय छे.

ए रीते सूक्ष्म जीवोनो विशेष सूत्रकारे पोतेज कह्यो, बादरनो विशेष नथी कह्यो. ते आगमथी कहेवाय छे—एकेंद्रिय अने पंचेंद्रिय ऊर्ध्व, अधो अने तीर्छा लोकमां छे, विकलेंद्रिय तो तीर्छा लोकमां छे, तेमज पृथ्वी, जल अने वनस्पति बार कल्पमां तथा सात पृथ्वीमां छे, पृथ्वी तो सिद्धशिला सुधी छे, तेजः मनुष्यक्षेत्र अने तीर्छा लोकमां छे. सुर लोकमां वाव्योने विषे मत्स्यादि जलचरो होता नथी. ग्रैवेयकमां तो वाव्योज न होय, तेथी जल पण न होय. बादर नामकर्मना उदयथी चर्मचक्षुवाळाना देखवामां आवे, ते बादर एकेंद्रिय जाणवा. तेमनुं आयुः आगळ कहेवाशे.

ए पांच स्थावर सूक्ष्म अने पांच बादर मळीने दश भेद थया, अने प्रत्येक वनस्पतिकाय ते बादरज होय छे, पण सूक्ष्म होय नहीं. तेथी

त्येक वनस्पतिकायनो एक जूदोज भेद होवाथी
वें अगीयार अपर्याप्ता मलीने बावीश भेद
थावर संसारी जीवना कह्या छे, अने बीजा
संसारी त्रस कहेवाय छे, तेना मूल चार भेद छे,
ते आः–बेइंद्रिय, चौरिंद्रिय तथा पंचेंद्रिय. ते-
ओमांना प्रथम बेइंद्रिय त्रस जीवना भेद कहे छे–

संखकवड्डयगंडुल,–जलोयचंदणगअ-
लसलहगाई ॥ मेहरकिमिपूअरगा, बेइं-
दिय माइवाहाई ॥ १५ ॥

छाया–शंखकपर्दकगण्डोल,–जलौकश्चंदनकाऽलसलहकादयः ॥
मेहरकृमिपूतरका: द्वींद्रिया मातृवाहादयः ॥

गाथा १५ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

संख-शंख.
कवड्डय-कोडीओ.
गंडोल-गंडोला.
जलोय-जलो.
चंदणग-चंदनक, अरिया, अक्ष.

अलस-अळसीयां.
लहगाई-लाळीया जीव.
मेहर-मेर (लाकडामां थता)
किमि-कृमि.
पूअरगा पोरा.
बेइंदिय-बेइंद्रिय.
माइवाहाई-चूडेल आदि.

अर्थः-(संख के०) दक्षिणावर्त्त प्रमुख मोटा तथा नाना शंख होय छे ते. (कवड्डय के०) कपर्दक एटले कोडीउ अने कोडा थाय छे ते, (गंडोल के०) गंडोला एने गगुना कहे छे, ए उदरमां मोटा कृमियां उत्पन्न थाय छे, ते जाणवां, (जलोय के०) जलो ए शरीरनी उपर गुंमडां वगेरे थाय, त्यारे तेनेः उपर मूकयाथी ते जग्यानुं रक्त शोषण करी ले छे ते. (चंदणग के०) एने सिद्धांतोमां अक्ष एवा नामथी प्रतिपादन कर्युं छे, एने अरिया पण कहे छे, ते साधु स्थापनामां राखे छे. (अलस के०) वर्षाकालमां

ष्टि थाय छे, ते वखते पृथिवीमांथी सर्पना आकारे लाल रंगवाला जे अति पातला जीवो उत्पन्न थाय छे, ते आश्लेषा नक्षत्रमां ज्यांसुधी वरसाद थतो होय, त्यांसुधी ज्यां त्यां घणा फरता दीठामां आवे छे, ज्यारे वरसाद रही जाय छे ने तडको पडे छे, त्यारे तेउंमांनो एक पण दीठामां आवतो नथी. एने जूनाग अथवा अलसीयां पण कहे छे. (लहग के०) रोटली प्रमुख पकावेलुं अन्न वासी रही जवाथी केटलाएक काले तेमां जे जीव पडे छे, तेने लालीया कहे छे, (आइ के०) आदि–विगेरे, अहीं आदि शब्दथी ठीपविगरे लेवा. (मेहर के०) काष्टमां जे कीडा थाय छे ते, (किमि के०) ए पण एक जातना कीडा होय छे, ते उदरमां उत्पन्न थाय छे, अथवा गुदप्रदेशने विषेअंदरना भागमां हरस थाय छे जेथी गुदामां चेळ आवे छे तथा गुंबडां वगेरेना क्षतने विषे जे कीडा थाय छे, तेने —

कृमि कहे छे. (पूत्र्प्ररगा के०) ए जीव पाणीमां उत्पन्न थाय छे, ए जीवोनो वर्ण रातो होय छे अने मुख कालुं होय छे. एने जाषामां पूरा-पोरा कहे छे; अने (माइवाहाई के०) मातृवाहादिक एने चूडेल पण कहे छे, आदि शब्दथी मनुष्यना अंगमां जे वाळा थाय छे, ते पण लेवा. इत्यादिक (बेइंदिय के०) बेइंडिय जीव जाणी लेवा. ए जलमां तथा स्थलमां उत्पन्न थाय छे. ते अनेक प्रकारना छे. एउने स्पर्शनेंडिय तथा रसनेंडिय ए बे इंडियो होय छे ॥ १५ ॥

हवे बे गाथा वडे तेइंडिय जीवना जेद कहे छे-

गोमी मंकणजूत्र्पा, पिपीलि उद्देहिय य मक्कोमा ॥ इल्लिय घयमिल्लीउ, सावय-गोकीमजाइउ ॥ १६ ॥ गद्दहयचोरकीमा, गोमयकीमा य धन्नकीमा य कुंथुगुवालिय इलिया. तेइंदिय इंदगोवाइ ॥ १७ ॥

१ गोवालिय -पाठांतरं.

गया-गुलमी मत्कुणजूके, पिपीलिकोपदेहिके च मत्कोटाः ॥
इल्लिका घृतेलिकाः, सावकगोकीटजातिकाः ॥१६॥
गर्दभकचौरकीटा, गोमयकीटाश्च धान्यकीटाश्च ॥
कुंथुगोवालिका इलिका.- स्त्रींद्रिया इंद्रगोपादयः॥१७॥

गाथा १६ मीना नूटा शब्दना अर्थ.

गोमी-कानखजरा.	इल्लिय-इयल.
मंकुण-माकड.	घयमिल्लीओ-घीमेल.
जूआ-जूका.	सावय-मावा.
पिपीलि-कीडी.	गोकीड-गींगोडा.
उद्देहिया-उद्देहिका, उधेइ.	जाईओ-जातिओ
य-वली.	
मक्कोडा-मंकोडा.	

गाथा १७ मीना नूटा शब्दना अर्थ.

गद्दहय-उत्तिगा, गद्धैया.	कुंथु-कुंथुआ.
चोरकीडा-विष्टाना कीडा.	गुवालिय-गोपालिक.
गोमयकीडा-छाणना कीडा.	इलिया-इल्लिका.
य-अने.	तेइंदिय-तेइंद्रिय.
धन्नकीडा-धान्यना कीडा	इदगोवाई-इंद्रगोपादि.
य-वली	

एने लोक सावा कहे छे. (गोकीमजाईउ के०) गोकीटक जाति, ए जीव गाय प्रमुख पशुना शरीरना अवयवोमां उत्पन्न थाय छे, ते तेउनी त्वचामा चोंटी रहेला होय छे. एने कही जाषामां चिचमी अथवा गींगोमा कहे छे ॥१६॥ (गद्दहय के०) गमैया, ए जीव गौशाला प्रमुखमां उत्पन्न थाय छे, एउनो वर्ण श्वेत होय छे, एउने शास्त्रोमां उत्तिंगा पण कहे छे. (चोरकीमा के०) ए जीव विष्टामां उत्पन्न थाय छे. (गोमयकीमा के०) ए जीव छाणमां उत्पन्न थाय छे. (धन्नकीमा के०) ए जीव धान्यमां उत्पन्न थाय छे, ते लोकमां धनेर्यां-(धनेमां) एवे नामे उलखाय छे. (य के०) वली (कुंथु के०) ए जीव सूक्ष्म छतां पांच रंगना थाय छे. एने कुंथुआ पण कहे छे. (गुवालिय के०) गोपालिक, ए एक जातिना एवा ज जीव थाय छे. ते अप्रसिद्ध छे. (इलिया के०) इलिका, ए जीव स्वाद अथवा चोखामां उत्पन्न थाय

छे. (इंदगोवाइ के०) इंद्रगोपादि, ए जीव अषाढमां प्रथम वरसाद पडे, त्यारे उत्पन्न थाय छे, एनो अत्यंत रक्त वर्ण होय छे, एने लोकमां मेहना मामा पण कहे छे, ते जोनारना माथा-पर राखतां वमन करे इत्यादिक (तइंदिय के०) ते इंद्रिय जीवो बीजा पण घणा छे, ते सर्व जाणी लेवा. ए तेइंद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय अने रसनेंद्रिय तथा घ्राणेंद्रिय ए त्रण इंद्रियो होय छे. एम ए तेइंद्रिय जीवोना भेद कह्या ॥१७॥

हवे चोरिंद्रिय जीवोना भेद कहे छे–

चउरिंदिया य विछू,–ढिंकुणभमरा य भमरिया तिड्डा ॥ मछिय डंसा मसगा, कंसारिय कविलडोलाइ ॥ १८ ॥

छाया–

चतुरिंद्रियाश्च वृश्चिक,–ढिंकुणभ्रमराश्च भ्रमरिका शलभाः ॥ मक्षिका दंशा मशका, कंसारिका कपिलडोलादयः ॥ १८ ॥

गाथा १७ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

चउरिंदिया–चौरिंद्रिय.	मच्छिय–माखी.
विच्छु–विंछी.	डंसा–डांस.
ढिंकुण–वगाइ.	मसगा–मच्छर.
भमरा–भ्रमर.	कंसारिय–कंसारी.
य–वली.	कविल–करोलिया.
भमरिया–भमरी,	डोलाइ–खडमांकडी.
तिड्डा–तीड.	

अर्थः—(चउरिंदिया के०) चौरिंद्रिय जीवो आ छे–(विच्छू के०) विच्छू ए जातना झेरी जीवो थाय छे, तेना पुंछडामां एक कांटो होय छे, तेना मारथी माणसने विष चडे छे, ते विंछी एवे नामे लोकमां प्रसिद्ध छे. (ढिंकुण के०) ए जीवो कांइक मह्मिकाने मळता होय छे, ते घोडाना तबेला प्रमुखने ठेकाणे उत्पन्न थाय छे, तेने लोकमां वगाइ कहे छे. (भमरा के०) ए जीवो काला वर्णना होय छे, अने ते घणुं

रीने ज्यां सुगंधी पुष्पोनां वृक्षो होय छे,
यां रहे छे, ए जीवोने पुष्पोनो सुगंध घणो प्रिय
होय छे, ए भ्रमर एवे नामे लोकमां प्रसिद्ध छे.
(भमरिया के०) भ्रमरिका, ए जीवो पीतादिक
घणा रंगवाला होय छे, तेमज विविध आकार-
वाला होय छे. (तिड्डा के०) ए जीवो वर्षाऋतुना
अवसानमां जे वखते धान्यनां वृक्ष पाकी रहेलां
होय छे, ते वखते आकाशमार्गे अगणित संख्या-
बंध उडतां कोइ धान्यनां क्षेत्र वगेरे उपर आ-
वीने पडे छे, ते जेटली जग्यामां आवी पडे छे,
तेटली जग्यानां काष्ट पान वगेरे सर्व खाइने
खाली करी नाखे छे, ते तीड एवे नामे लोकमां
प्रसिद्ध छे. उपलक्षणथी पतंगीयां विगेरे पण
जाणी लेवां. (मक्खिय के०) मक्षिका, ए जीवो
लोकमां अति प्रसिद्ध छे, ए माखी एवे नामे
ओलखाय छे, उपलक्षणथी मधुमक्षिका पण
जाणी लेवी. (डंसा के०) डांस, ए जीवो सिंधु-

देशमां प्रसिद्ध छे. ए घणुं करीने वर्षाकालमां
चीकणी जमीनमां उत्पन्न थाय छे. (मसगा के०)
मशक, ए जीवो लोकमां मछर एवे नामे ओळ-
खाय छे, अने सर्व ऋतुमां थाय छे, ए लोकमां
प्रसिद्ध छे. (कंसारी के०) ए जीवो घणुं करीने
उजड घर प्रमुखमां उत्पन्न थाय छे, ते लोकमां
प्रसिद्ध छे. (कविल्ल के०) करोळिया अने (कोलाइ
के०) खडमांकडी, आदि शब्दथकी बीजा
चौरिंद्रिय जीवो होय. ते सर्व जाणी लेवा. को
पनमां (कविल्लकोला य के०) कपिलक ना
कोइ जीवने कहेला छे. ए जीवने स्पर्शनेंद्रिय
रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय तथा नेत्रेंद्रिय ए चार इंद्रि
होय छे. बीजी रीते पण बेइंद्रिय विगेरेनां लक्ष
कहे छे-प्राये करी बेइंद्रियने पग नथी होता, तेइं
द्रियने चार उपर छ अथवा घणा पण होय छे
चौरिंद्रियने छ के आठ पण होय छे पंचेंद्रियने
चार के आठ अथवा सर्प अने मत्स्यनी पेठे

पण होय, अथवा मस्तक अने मुखनी वे बाजुए वे वाळ होय, तेइंद्रीय जाणवा तथा जेना माथामां शींगडानी माफक वाळो (केशो) होय ते चौरंद्रीय जाणवा. ॥ १८ ॥

हवे पंचेंद्रिय जीवोना भेद अनुक्रमे ८ गाथावडे कहे छे–

पंचिंदिया य चउहा, नारयतिरिया मणुस्सदेवा य ॥ नेरइया सत्तविहा, नायवा पुढविभेएणं ॥ १९ ॥

छाया–पंचेंद्रियाश्च चतुर्धा, नारकतिर्यंचौ मनुष्यदेवौ च ॥ नैरयिकाःसप्तविधा, ज्ञातव्याः पृथिवीभेदेन ॥१९॥

गाथा १९ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

पंचिंदिया–पंचेंद्रिय.	तिरिया–तिर्यंच.
य–अने.	मणुस्स–मनुष्य.
चउहा–चार प्रकारना.	देवा–देवता.
नारय–नारकी.	

य—वळी.

नेरइया—नारकीना जीव.

सत्तविहा—सात प्रकारना.

नायव्वा—जाणवा.

पुढविभेएणं—(रत्नप्रभादि) पृथ्वीना भेदे करीने.

अर्थः—(पंचिंदिया के०) जेने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय तथा श्रोत्रेंद्रिय ए पांच इंद्रियो होय, ते पंचेंद्रिय जीव कहेवाय छे, इहां "च" समुच्चयार्थमां छे. ते जीव (चउहा के०) चार प्रकारना छे. एक (नारय के०) ते नारक पदनो व्याकरणनी रीतीए अर्थ कहे छे. नारकी. नारक एटले "नरान् उपलक्षणात् तिरश्चोऽपि योग्यतानतिक्रमेण कायंति आकारयंति इति नरकाः. तेषु भवाः नारकाः." एटले मनुष्योने अने उपलक्षणथी तिर्यंचोने पण योग्यता प्रमाणे बोलावे ते नरको कहेवाय अने ते नरकोमां जे उत्पन्न थाय. ते नारक जीव कहेवाय. बीजा (तिरिया के०) तिर्यंच. जीव

मणुस्स के०) मनुष्य, चोथा (देवा के०) देवता. तेमां प्रथम (नेरइया के०) नारकीना जीव ते (पुढविसत्तविहा के०) रत्नप्रभादि पृथ्वीना भेदे करी (सत्तविहा के०) सात प्रकारना छे. तेमां रत्नो छे प्रभा एटले स्वभाव जेनो, अथवा घणे भागे रत्नोनी प्रभा एटले कांति छे जेनी, ते रत्नप्रभा जाणवी. ते बहु कांति खरकांडमां रहेला प्रथम रत्नकांडनी अपेक्षाए कही छे. आ रत्नप्रभामां १६००० योजन प्रथम खरकांड छे, ८४००० योजन बीजुं पंकबहुलकांड छे, अने ८०००० योजन जलबहुलकांड छे. रीते १८०००० योजन प्रमाण रत्नप्रभा, छे. बीजी पृथ्वीओ तो पृथ्वीरूपेज छे. फक्त नाम प्रमाणे एटले शर्कराप्रभा—बहु शर्करारूप इत्या-इत्यादिक रीतिए सर्व पृथ्वीनां नाम अन्वय सहित—यथार्थ करी जाणवा. ते सात पृथ्वीओनां अन्वय एटले व्युत्पति रहित नाम कहे

पाणीमां रहे तथा पाणीमांज नाश पामे, ते जलचर जीव जाणवा. बीजा (थलयर के०) स्थलचर एटले जे जीवोनी उत्पत्ति, स्थिति तथा नाशनो संभव जलचरोनी पेठे पृथ्वी उपर होय ते, तथा त्रीजा (खयरा के०) खेचर एटले जे जीवोनी चालवानी स्थिति आकाशने विषे होय, ते जाणवा. तेउमां प्रथम जलचर जीवना मुख्य पांच भेद छे, ते आ प्रमाणे–एक (सुसुमार के०) पाडांना जेवा मत्स्य होय छे, ते घणुं करीने मीठा पाणीना तलाव प्रमुखमां दीठामां आवे छे, बीजो (मछ के०) नाना प्रकारनां जे बीजां माछलां दीठामां आवे छे ते, ए जातीना जीवो घणुं करी खारा समुद्रमां विशेष दीठामां आवे छे. त्रीजो (कछव के०) कछप. ए जीवो घणुं करी मीठा पाणीना तलाव अथवा खोदेला कूवाना पाणीमां दीठामां आवे छे. एनी त्वचा घणी कठिन होय छे. अने तेमांथी ढाल ए नामनुं हथियार देहरक्षणार्थे लोक करे छे. जीवने

लोकमां काचवाना नामें उंलखे ने, चोथो (गाहा के०) ए जीवो समुद्रमां तेमज मीठा पाणीना तलाव प्रमुखमां पण थाय छे. ए जीव तंतु आकारे होय छे, ने अति वलवान् होय छे, पाणीमां एनुं एटलुं जोर होय छे के. ते हाथीने पण घसमी जाय छे, एने लोकमां जल एवे नामे उंलखे छे, पांचमो (मगरा के०) मगर, ए जीव समुद्रमां होय छे, एनुं शरीर अति विशाल होय छे, ए लोकमां मगरमत्स्य एवे नामे उंलखाय ने,ए (य के०) च शब्दे करी बीजा पण (जलचारी के०) जलचर जीव घणा प्रकारना छे. ए जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच जीवना नेद कह्या ॥२०॥

हवे स्थलचर जीवोना नेद कहे ने–

चउपय उरपरिसप्पा, नुयपरिसप्पा य थलयरा तिविहा ॥ गोसप्पनउलपमुहा, बोधव्वा ते समासेणं ॥ २१ ॥

छाया–चतुष्पदा उरःपरिसर्पा, भुजपरिसर्पाश्च स्थलचरा त्रिविधाः ॥
गोसर्पनकुलप्रमुखा बोद्धव्यास्ते समासेन ॥ २१ ॥

गाथा २१ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

चउपय–चार पगवालां.
उरपरिसप्पा उरःपरिसर्प.
भुयपरिसप्पा–भुजपरिसर्प.
य–वळी.
थलयरा–स्थलचर जीव.
तिविहा–त्रण प्रकारना.
गो–गाय.
सप्प–सर्प.
नउल नोळीआ.
पमुहा पमुख.
बोद्धवा जाणवा.
ते तेओ.
समासेणं संक्षेपथी.

अर्थः—(थलयरा तिविहा के०) स्थलचर जीवो त्रण प्रकारना छे. ते आ–एक (चउपय के०) चतुष्पद एटले चार पगवाळां सर्व प्रकारनां पशुओ जाणी लेवां, बीजा (उरपरिसप्पा के०) उरःपरिसर्प, ए जीवो उदरथी चाले छे. एनी नाग प्रमुख घणी जाति होय छे. एमां केटलाएक जीवो विषरहित होय छे, अने केटला-

एक विषसहित होय छे. ते लोकमां प्रसिद्ध छे. (य के०) वली त्रीजा (भुयपरिसप्पा के०) भुजपरिसर्प, ए जीवो भुजावडे चाले छे. ते नोली-या प्रमुख जाणी लेवा. ए उपर कह्या जे त्रण प्रकारना स्थलचर जीवो तेउं अनुक्रमे (गो के०) गाय प्रमुख ते चतुष्पद, (सप्प के०) सर्प प्रमुख ते उरपरिसर्प तथा (नउलपमुहा के०) नोलिया प्रमुख ते भुजपरिसर्प, (ते के०) तेओ (समासेणं के०) संक्षेपमात्रे करी (बोद्धव्वा के०) जाणी लेवा. ए स्थलचर जीवोना भेद कह्या ॥ २१ ॥

हवे खेचर जीवोना भेद कहे छे—

खयरा रोमयपक्खी, चम्मयपक्खी य पायमा चेव ॥ नरलोगाउ वाहिं, समुग्ग-पक्खी वियययपक्खी ॥ २२ ॥

छाया-खचरा रोमजपक्षिणश्चर्मजपक्षिणश्च मकटाश्चैव ॥
नरलोकतो वहिः समुद्रकपक्षिणो विततपक्षिणः ॥२२॥

धरादि पर्वतोमां प्रसिद्ध नथी. घणु करीने जन्म घटतुं नथी, संहरणथी अथवा विद्यालब्धिथी त्यां गयेलांने मरण तो संभवे. मनुष्यक्षेत्रनी बहार मनुष्यने जन्म मरण त्रणे कालमां नथी. जो के कोइ देव, दानव अथवा विद्याधर वेर वाळवा माटे एवी बुद्धि करे के, आ मनुष्यने आ स्थानथी उपाडी मनुष्यक्षेत्रनी बहार फेंकी दउं, के जेथी ए रखडीने मरी जाय. तोपण लोकना प्रभावथीज फरी ते कोइ पण बुद्धि उपजे, के जेथी संहरण न करे, अथवा संहरण करी फरी पाछो लइ आवे. तथा जे जंघाचारी अथवा विद्याचारी नंदीश्वरादि पर्यंत जाय छे, ते पण त्यांथी मनुष्यलोकमां आवीने मरे छे. ए प्रसंगथी उपयोग माटे कह्युं छे. तेथी बहार उपर कहेलां बे जातिनां पक्षीउ होय छे, तेमां समुद्गकपत एटले संपुटनी पेठे समुद्गकपक्षी-

नी पांख बेसती वखते संकोचने पामे छे, अने विततपक्षीओनी पांख सर्वदा विस्तारेलीज होय छे. आ बे जातना पक्षीओ आकाशमांज उत्पन्न थाय. अने आकाशमांज मरण पामे, एम संप्रदायथी संभळाय छे. ए सर्व खेचर जीवो जाणवां ॥ २२ ॥

हवे उपर त्रण प्रकारना जे तिर्यंच जीवो कह्या, ते एकेकना वळी बे बे भेद बीजी रीते कहे छे–

सवे जलथलखयरा, समुच्छिमा गब्भया दुहा हुंति ॥ कम्माकम्मग (भूमि) मछिया अंतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥

छाया–सर्वे जलथलखचराः, संमूर्छिमा गर्भजा द्विधा भवंति ॥ कर्माकर्म (क) महीजा, आंतरद्वीपा मनुष्याश्च ॥

गाथा २३ मीना शब्दोना अर्थ.

सव्वे-सर्वे प्रकारना. दुहा-बे प्रकारना.
जल-जलचर. हुंति छे.
थल-स्थलचर. कम्मा कम्मगभूमिआ-कर्मभू-
खयरा-खेचर. मि अने अकर्मभूमिना.
समुच्छिमा-समूर्छिम. अंतरदीवा अंतरद्वीपना.
गब्भया-गर्भज. मणुस्सा मनुष्य.

अर्थः—ए उपर कहेला (सव्वे के०) सर्व प्रकारना (जलथलखयरा के०) जलचर, स्थलचर तथा खेचर जीवो ते एक (समुच्छिमा के०) संमूर्छिम अने बीजा (गब्भया के०) गर्भज (दुहा के०) द्विधा एटले बे प्रकारना (हुंति के०) छे. एम प्रत्येकना बब्बे प्रकार होवाथी छ भेद थया. तेमां जे जीवो माता पितानी अपेक्षा विना उत्पन्न थाय, ते समूर्छिम कहेवाय छे, अने जे जीवो गर्भमां उत्पन्न थाय ते गर्भज कहेवाय छे. ते पंचेंद्रिय तिर्यंचो गर्भज कहेवाय छे.

छे, अने बीजा एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय तथा तिर्यच ए सर्व जीव समूर्च्छिमज होय छे. ए तिर्यचना सर्व मली अम्रतालीश भेद थाय छे, ते आवी रीते–प्रथम एकेंद्रिय जीव सधा थावर कहेवाय छे. तेना बावीश भेद आगल चौदमी गाथाना अर्थमां दर्शाव्या छे, अने बीजा त्रस जीवना बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चौरिंद्रिय अने पंचेंद्रिय ए चार भेद मूल छे; तेमां बेइंद्रिय; तेइंद्रिय तथा चोरिंद्रिय ए त्रण विकलेंद्रियने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता गणतां छ छ भेद थाय, ते पूर्वोक्त बावीश साथे मेलवतां अठ्ठावीश भेद थया.

हवे पंचेंद्रिय तिर्यचना वीश भेद छे, ते देखाडे छे. जलचर थलचर, खेचर, उरपरिसर्प अने भूजपरिसर्प, ए मूल पांच भेद संमूर्च्छिमना अने पांच गर्भजना मली दश भेद थाय. ते दश

पर्याप्ता अने दश अपर्याप्ता मळी वीश भेद थया, तेने पूर्वोक्त अठ्यावीश साथे मेळवतां अडता-लीश भेद तिर्यंचना थाय. ए रीते गाथाना पूर्वार्धमां पंचेंद्रिय तिर्यंचनुं वर्णन कर्युं. प्रसंगथी संमूर्छिम जीवोनी उत्पत्तिनो विशेष कहे छे-एकेंद्रिय अने द्वींद्रिय पोतानी जातिना मळनी अपेक्षा वगर उत्पन्न थाय छे, त्रींद्रिय पोतानी जातिना विष्टा विगेरे मळोमां उत्पन्न थाय छे, चतुरिंद्रिय पोतानी जातिना लाळ, मळ अने स्पर्शादिकथी उत्पन्न थाय छे, पंचेंद्रियमां मत्स्यादि जलचरो (गर्भज अने संमूर्छिम एम) बे भेदे छे, स्थलचरोमां उरःपरिसर्प अने भुज-परिसर्प पण प्राये बे भेदे छे, चतुष्पद तिर्यंच संमूर्छिम क्यांइक उत्पन्न थाय छे, गर्भज तिर्यंच अने मनुष्य प्रसिद्धज छे, संमूर्छिम मनुष्यनी उत्पत्ति आगळ कहेवाशे, खेचरोमां शुक

इत्यादिक (?) खंजरिट (दीवाळी घोडो) विगेरे खेचरोमां इत्तिना कारणथी तेनी जातिना सर्व अवयवपणा वडे उत्पन्न थाय छे; गर्भज खेचरो जे इंडामांथी थाय छे, ते तो प्रसिद्ध छे.

हवे गाथाना उत्तरार्धमां पंचेंद्रिय मनुष्यना भेद कहे छे–

(कम्माकम्मग महिया के०) कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेला, अकर्मभूमिमां उत्पन्न थयेला तथा (अंतरदीवा मणुस्सा य के०) अंतरद्वीपमां उत्पन्न थयेला ए त्रण प्रकारना मनुष्य होय छे. तेमां कर्म एटले कृषि वाणिज्यादिक अथवा श्रुतचारित्ररूप मोक्षनुं अनुष्ठान छे जेमां प्रधान ते कर्मभूमि कहीए. ते भूमिने विषे जे मनुष्य उत्पन्न थाय छे, ते कर्मभूमिज कहेवाय छे. ते कर्मभूमिओ अढी द्वीपमां पंदर छे, अने जेमां पूर्वोक्त कर्म नथी एवी अकर्म-

भूमिउं त्रीश छे, तथा अंतरद्वीप छप्पन छे, ते आ प्रमाणे—ए जंबूद्वीपना मध्यभागे मेरु पर्वत छे. ते मेरुथी दक्षिण दिशाए लवण समुद्रने लगतुं लवण समुद्रनी उत्तर दिशे भरत क्षेत्र छे, ते कर्मभूमि छे, तथा ते भरत क्षेत्रने उत्तर दिशाने छेडे हेमवंत पर्वत छे, ते पर्वत मूकी तेनी उत्तर दिशामां हिमवंत नामे युगलियानुं क्षेत्र छे, अने वली मेरुथी उत्तर दिशाए लवण समुद्रने लगतुं समुद्रनी दक्षिण दिशाए ऐरवत क्षेत्र छे, ते कर्मभूमि छे. ते ऐरवतनी दक्षिण दिशाने छेडे शिखरी नामे पर्वत छे, ते पर्वत मूकीने तेनी दक्षिण दिशाए एक हिरण्यवंत नामे युगलियानुं क्षेत्र छे, एटले पूर्वे कहेलां एक हिमवंत अने बीजुं हिरण्यवंत ए बे अकर्मभूमि क्षेत्र छे; एने विषे युगलिया मनुष्य रहे छे, तेनुं सदा काले एक गाउ देहमान अने एक पल्योपमनु

युषु ठे. त्यां सदाकाल त्रीजो आरो वर्त्ते ठे.

तथा वली ते पूर्वोक्त हिमवंत नामे युगलियाना क्षेत्रथी उत्तर दिशाए एक महाहिमवंत पर्वत छे, ते पर्वतनी उत्तर दिशाए हरिवर्ष नामे युगलियानुं क्षेत्र छे, तथा पूर्वोक्त हिरण्यवंत नामे युगलियाना क्षेत्रथी दक्षिण दिशाए एक रुक्मी नामे पर्वत ठे, ते पर्वतनी दक्षिण दीशाए एक रम्यक नामे युगलियानुं क्षेत्र ठे. ए रीते एक हरिवर्ष तथा बीजुं रम्यक ए बे अकर्मभूमि क्षेत्रमां युगलिया वसे छे, तेनुं सदाकाले बे गाउ देहमान अने बे पल्योपमनुं आयु ठे. त्यां सदाकाल बीजो आरो वर्त्ते ठे.

तथा वली हरिवर्ष नामे युगलियाना क्षेत्रथी उत्तर दिशाए मेरुनी तरफ लाल हिंगला जेवा वर्णे निषध नामे पर्वत ठे, तेनी पासे एक देवकुरु नामे युगलियानुं क्षेत्र छे, तथा वली मेरु-

थकी उत्तर दिशाए जे रम्यक नामे युगलियानुं क्षेत्र छे, तेनाथी दक्षिण दिशाए नील वर्णे एक नीलवंत नामे पर्वत छे, ते पर्वतथकी दक्षिण दीशाए मेरुनी पासे एक उत्तरकुरु नामे युगलियानुं क्षेत्र छे. एटले एक देवकुरु अने बीजुं उत्तरकुरु ए बे अकर्मभूमि क्षेत्र, तेने विषे युगलिया मनुष्य रहे छे. तेनुं सदा काल त्रण गाउनुं देहमान छे, अने त्रण पल्योपमनुं आयु छे. त्यां सदाकाल पहेलो आरो वर्ते छे.

तथा निषध अने नीलवंत ए बे पर्वतो कह्या तेनी वच्चे मेरु पर्वत छे, ते मेरुनी चारे दिशा मांहेथी पूर्व दिशाए पूर्व महाविदेहना सोल विजय छे, अने पश्चिम दिशाए पश्चिम महाविदेहना सोल विजय छे, ए बेउ मली बत्रीश विजयनुं एक महाविदेह नामे कर्मभुमि क्षेत्र छे.

ए रीते प्रथम जंबूद्वीपने विषे एक हेमवंत अने हिरण्यवंत, बीजुं हरिवर्ष ने रम्यक, त्रीजुं

देवकुरु ने उत्तरकुरु, ए त्रण जोमते मली ठ क्षेत्र युगलिया मनुष्यनां छे, ते अकर्मभूमि कहीए, कारण के ए क्षेत्रमां जे मनुष्य रहे छे, तेने प्रायः कर्म थोडां लागे छे, केमके असि मसि ने कृषि ए त्रण वस्तु कर्मबंधनुं कारण छे, ते वस्तु ए क्षेत्रोमां नथी, अने एक भरत, एक ऐरावत तथा एक महाविदेह मली त्रण क्षेत्र कर्मभूमि छे.

ए रीते बीजो धातकीखंड द्वीप अने पुष्करवरनो अर्ध, ए दोढ द्वीपमां प्रत्येके प्रत्येके एक पूर्व दिशाए अने बीजो पश्चिम दिशाए मली बे बे मेरु पर्वत छे, अने ज्यां एक मेरु होय, त्यां एक भरत, एक ऐरवत तथा एक महाविदेह, ए त्रण कर्मभूमि क्षेत्र होय, अने पूर्वोक्त जंबूद्वीपनी पेठे ठ युगलियानां क्षेत्र होय, तेवारे बे भरत, बे ऐरवत, बे महाविदेह, ए ठ क्षेत्र

कज रहे छे. स्थान (भवन) अने स्थानी (भवनवासी)नो भेदाभावथी भवन एटले भवनवासी देवो, तेना अधिपति एटले इंद्र ते भवनाधिपति कहेवाय. हवे तेना भेद कहे छे- (दसहा भवणाहिवई के०) भवनाधिपति देवो दश भेदे छे, ते आ–असुरकुमार, नागकुमार, सुवर्णकुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार दिक्कुमार, वायुकुमार तथा स्तनितकुमार, ए दश भेद कह्या. हवे एनु रहेवानु स्थान कहे छे–मेरु पर्वतनी नीचे रत्नप्रभा नामे प्रथम नरकनु दल जाडपणे १७०००० योजननु, छे, तेमां तेर पाथडा छे, ते तेर पाथडानां बार आंतरा छे, तेमांथी पहेलो अने छेल्लो आंतरो मूकीने बाकीना दश आंतरा वच्च रह्या तेमांहे एकेके आंतरे एकेका भवनपति देवोना निकाय छे, ते दश निकायमां प्रत्येक ए

दक्षिणे अने एक उत्तरे मली बे बे इंद्र छे, ते वारे दश निकायना वीश इंद्र छे. ए प्रथम नवन-पति देवोने रहेवानुं स्थानक कह्युं.

हवे ए बीजा व्यंतर निकायना देवो कहे छे. तेमां प्रथम व्यंतर पदनो अर्थ कहे छे– आश्रयपणा वडे करीने विविध प्रकारे अंतर (ते वनान्तररूप) छे जेने, ते व्यंतर कहेवाय, कारण के तेओ वनोना अंतरोमां, शैलोना अंत-रोमां रहे छे, ते वात प्रसिद्ध छे. अथवा नृत्यनी माफक चक्रवर्तीने आराधवाथी मनुष्यो थकी 'वि' एटले गयुं छे अंतर जेओनुं, ते व्यंतर कहेवाय, अथवा वनोना अंतरोमां उत्पन्न थाय, तेथी वानमंतर पण कहेवाय. (अठविहा वाणवंतरा हुंति के०) आठ प्रकारना वाणव्यंतर देवो छे, तेमां व्यंतर देवोना आठ नेद छे, ते आ– पिशाच, नूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष,

महोरग अने गंधर्व, तथा वीजा अणप्रज्ञ (अणपन्नी), पंचप्रज्ञ (पणपन्नी), रुषिवादी, भूतवादी, कंदी, महाकंदी, कुष्मांड अने पतंग ए आठ भेद जे छे ते, वाणव्यंतर देवोना जाणवा. हवे तेओनां रहेवानां स्थान कहे छे–

मेरु पर्वतना मूलमां सरखी पृथिवी छे. त्यांथी मांडी नीचे जइए, तेवारे (१८००००) योजन रत्नप्रभा पृथिवीना तलीया लगण थाय, तेमांथी एक हजार योजन नीचे मूकीए, वाकी (१७८०००) योजनमां पूर्वोक्त तेर पाथडा छे, तेमां दश भवनपतिना देवो रहे छे, अने उपरना एक हजार योजन मूक्या छे, तेमांथी वली सो योजन हेठल अने सो योजन उपर मूकी वाकी आठसो योजन रह्या, तेमां आठ व्यंतरनी निकाय छे. ए आठ निकायमां पण दक्षिण अने उत्तर दिशा मली एकेका निकायना वे वे इंद्र छे, ते

वारे सोल इंद्र व्यंतर देवोना थाय, तथा वली उपरना जे एकसो योजन मूक्या छे, तेमांथी वली दश योजन उपर तथा दश योजन नीचे मूकीए, बाकी एंशी योजन रहे, तेमां आठ प्रकारना वाणव्यंतर देवो रहे छे. एमां पण पूर्वोक्त रीते एकेका निकायने विषे बे बे इंद्र गणतां सोल इंद्र वाणव्यंतर देवोना थाय. सर्व मली बे प्रकारना व्यंतर देवोना बत्रीश इंद्र छे. तेनी साथे पूर्वोक्त जवनपति देवोना वीश इंद्र मेलवीए, ते वारे बावन इंद्र थाय.

हवे त्रीजा ज्योतिषी देवोनी निकायना देवो कहे छे. (जोइसिया पंचविहा के०) ज्योतिष्क देवो पांच जेदे छे, ते आ–चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र तथा तारा. ते फरी बे प्रकारना छे–एक चर ने बीजा स्थिर. तेमां जे मनुष्यक्षेत्रने विषे ज्योतिषी छे, ते चर एटले अस्थिर सदाकाल फरता रहे

ग्रैवेयकना देवो अने वीजा पांच अनुत्तर विमा-
नना देवो जाणवा.

हवे ए कल्पोपपन्न तथा कल्पातीत देवोनां स्थानक कहे छे. चौद रज्जु प्रमाणे लोक छे, तेमां सात राज नीचे साते नारकीए करी पुर्यो छे, अने सात राज ऊंचो छे. ए चौद राजलोक पुरुषने आकारे छे, तेमां नाभिने स्थानके मनुष्यलोक छे, अने मेरुने मूले समभूतला पृथिवी छे, त्यांथी सातसें नेवुं योजनथी मांडीने नवसें योजन पर्यंत ऊंचा ज्योतिषी देवो रहे छे, त्यार पछी एक राजने आशरे ऊंचा जइए, त्यां दक्षिण दिशाए सौधर्म देवलोक अने उत्तर दिशाए ईशान देवलोक ए रीते बे देवलोक जोडाजोड छे. त्यार पछी त्रीजो सनत्कुमार दक्षिण दिशाए अने चोथो माहेंद्र उत्तर दिशाए, ए रीते बे देवलोक जोडाजोडे छे. त्यार पछी वली पांचमो

॥ देवलोक, छठो लांतक, सातमो शुक, आठमो
हस्रार, ए चार देवलोक अनुक्रमे एक एकनी
पर केटलेक केटलेक आंतरे एकला एकलाज
. त्यार पछी वली केटलाएक उंचा जइए, त्यां
नवमो आनत अने दशमो प्राणत ए बे देवलोक
दक्षिण अने उत्तरे जोमाजोडे छे. त्यार पछी
वली पण केटलाएक उंचा जइए त्यारे, अगी-
यारमो आरण अने बारमो अच्युत ए बे देवलोक
दक्षिण अने उत्तर दिशाए जोमाजोडे छे. त्यार
पछी वली केटलाएक उंचा जइए, त्यारे चौद
राजलोकरूप पुरुषना गलाने स्थानके नव ग्रैवे-
यक छे. त्यार पछी वली केटलेक उंचे पांच
अनुत्तर विमान छे. त्यार पछी चौद राजलोकरूप
पुरुषना ललाटने ठेकाणे सिद्धशिला छे, ते
स्फटिक रत्ननी परे निर्मल छे, त्यां सिद्धना जीवो
रह्या छे. एम ए देवताने रहेवानां स्थानक कह्यां.

हवे अहीं वली त्रण प्रकारना किल्बिषिया देवो तथा नव प्रकारना लोकांतिक देवो छे, तेने रहे- वानां स्थानक कही वतावे छे. त्यां प्रथम किल्बिषिया देवोनां स्थानक कहे छे. एक तो पहेला अने बीजा देवलोकनी नीचे त्रण पल्यो- पमना आयुष्यवाला रह्या छे, अने बीजा वली त्रीजा तथा चोथा देवलोकनी नीचे त्रण साग- रोपमना आयुवाला रह्या छे, तथा त्रीजा वली पांचमा देवलोकनी नीचे तेर सागरोपमना आयु- वाला रह्या छे. ए त्रण प्रकारना किल्बिषिया देवो चंमालप्रायः जाणवा, तथा वली पांचमा देवलोकने छेडे उत्तर अने पूर्वनी अभ्यंतर कृष्णराजीमां नव प्रकारना लोकांतिक देवो रहे छे, एनुं आठ सागरोपमनुं आयुष्य छे.

ए सर्व देवोना वधा मली एकसो ने अठाणुं भेद शास्त्रोमां कह्या छे, ते आ प्रमाणे—

ज्ञवनपतिना दश ज्ञेद, ब्बर ज्योतिषीना पांच ज्ञेद, स्थिर ज्योतिर्षीना पांच ज्ञेद, वैताढ्यने विषे रहेनारा तिर्यग्जृंजक देवोना दश ज्ञेद, नारकी जीवोने डुःख आपनारा परमाधामीना पंदर ज्ञेद, व्यंतरना आठ ज्ञेद, वाणव्यंतरना आठ ज्ञेद, किल्विषियाना त्रण ज्ञेद, लोकांतिकना नव ज्ञेद, बार देवलोकना बार ज्ञेद, नव ग्रैवेयकना नव ज्ञेद, पांच अनुत्तर विमानोना पांच ज्ञेद, ए सर्वे मली नवाणुं ज्ञेद थया. एने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ए बे ज्ञेदे गुणतां एकसो ने अठाणुं ज्ञेद थाय छे ॥ २४ ॥

ए रीते पूर्वोक्त तिर्यंचना अम्तालीश, नारकीना चौद, मनुष्यना त्रणसें ने त्रण तथा देवताना एकसो ने अठाणुं मली जीवोना ५६३ ज्ञेदो थया. एम चौद राजलोकमां जीवादिक ठ द्रव्य ठे, तेमां एक जीव द्रव्यना एक संसारी

अने बीजा सिद्ध ए भेद पूर्वे कह्या हता, तेमांथी संसारी जीवोना पांचसें त्रेसठ भेद संक्षेप कही देखाड्या, ए संसारी जीवोनो विचार कह्यो.

हवे बीजा सिद्ध जीवोना भेद कहे छे—

सिद्धा पनरसभेया, तित्थअतित्थाइ-
सिद्धभेएणं ॥ एए संखेवेणं, जीववि-
गप्पा समक्खाया ॥ २५ ॥

छाया—सिद्धाः पंचदशभेदा,—स्तीर्थातीर्थादिसिद्धभेदेन ॥
एते संक्षेपेण, जीवविकल्पाः समाख्याताः ॥ २५ ।

गाथा २५ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

सिद्धा—सिद्ध.
पनरस—पंदर.
भेया—भेदोवाळा.
तित्थ—तीर्थंकर.
अतित्थाइ—अतीर्थंकरादि.
सिद्धभेएणं—सिद्धना भेदे करी.
एए—ए.
संखेवेणं—संक्षेपथी.
जीवविगप्पा—जीवना विकल्प (भेदो).
समक्खाया—कह्या.

अर्थः–(सिद्धा के०) सिद्ध, ते सर्व कर्मोथी मुक्त थयेला जीवो, ते (तित्थअतित्थाइ के०) तीर्थंकर तथा अतीर्थंकरादि (सिद्धभेएणं के०) सिद्धना भेदे करी (पनरसभेया के०) पंदर भेद थाय छे ते पंदर भेदनां नाम नवतत्त्वना बाला-वबोधथकी जाणवां. (एए संखेवेणं के०) ए पूर्वोक्त सर्व संक्षेपे करीने (जीवविगप्पा के०) जीवना विकल्प एटले भेद ते, संसारी अने असंसारी एम बीजी गाथामां कह्या प्रमाणे (समक्खाया के०) रुडे प्रकारे कह्या छे ॥ २५ ॥

हवे एकेंद्रियादि जीवोनां शरीर, आयुः, स्वकायस्थिति प्राण अने योनीना प्रमाण प्रगट करता ग्रंथकर्त्ता कहे छे—

एएसिं जीवाणं, सरीरमाऊ ठिई सका-
यंमि ॥ पाणा जोणिपमाणं, जेसिं जं
अत्थि तं भणिमो ॥ २६ ॥

[illegible] दीवसो, गतोरमागुः [illegible] ॥
[illegible] गतो मर्दिन [illegible] ॥

गाथा ८८ नीना [illegible] शब्दना अर्थ.

[illegible] — गोणि - पोनि.

[illegible]

[illegible]

(जोणिपमाणं के०) चोराशी लक्ष योनिमांहेली कया कया जीवोमां केटली केटली योनिओ होय, तेनुं प्रमाण, ते (जेसिं जं अत्थि के०) जे जे जीवोनुं जेटलुं छे, (तं नणिमो के०) तेजीवोनुं तेटलुं अमे कहीशुं ॥ २६ ॥

त्यां प्रथम शरीरना प्रमाणनो प्रकार कहे छे–

अंगुलअसंखन्नागो, सरीरमेगिंदियाण सवेसिं ॥ जोयणसहस्समहियं, नवरं पत्तेयरुस्काणं ॥ २७ ॥

छाया–अंगुलासंख्यभागं, शरीरमेकेन्द्रियाणां सर्वेषाम् ॥ योजनसहस्रमधिकं, नवरं प्रत्येक वृक्षाणाम् ॥ २७ ॥

गाथा २७ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

अंगुल–अंगुलना.
असंख–असंख्यातमा.
भागो–भाग जेटलुं.
सरीरं–शरीर.
सव्वेसिं एगिंदियाण–सर्व एकेंद्रिय जीवोनां.
जोयण–योजन.
सहस्सं–हजार
अहियं–अधिक.
नवरं–विशेष.
पत्तेय रुस्काणं–प्रत्येक वनस्पतिना.

अर्थः– (सव्वेसिं एगिंदियाण सरीरं के०) सर्वे सूक्ष्म तथा बादर पृथ्वीकाय प्रमुख एकेंद्रिय जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण (अंगुलअसंखभागो के०) अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटलुं होय छे, (नवरं के०) पण एटली विशेषता छे जे, (पत्तेय-रुक्खाणं के०) प्रत्येक वनस्पतिना शरीरनुं प्रमाण (जोयणसहस्समहियं के०) एक हजार योज-नथी कांइक अधिक होय छे. उपर गाथामां पृथ्व्यादिकनुं शरीरनुं प्रमाण सामान्यपणे कह्युं, हवे विस्तारथी बीजा ग्रंथना आधारे कहे छे–सूक्ष्म निगोदनुं शरीर अंगुलनो असंख्यातमो भाग, तेथी असंख्यातगणुं एक सूक्ष्म वायुकायनुं शरीर, तेथी असंख्यातगणुं एक सूक्ष्म तेजस्कायनुं शरीर, तेथी असंख्यात-गणुं एक सूक्ष्म अप्कायनुं शरीर, तेथी असंख्या-तगणुं एक सूक्ष्म पृथ्वीकायनुं शरीर, तेथी

असंख्यातगणुं एक बादर वायुकायनुं शरीर, तेथी असंख्यातगणुं एक बादर तेजस्कायनुं शरीर, तेथी असंख्यातगणुं एक बादर अप्कायनुं शरीर, तेथी असंख्यातगणुं एक बादर पृथ्वीकायनुं शरीर, तेथी असंख्यातगणुं एक बादर निगोदनुं शरीर जाणवुं. तथा पोतपोताना स्थानमां तो सर्वेपण अंगुलना असंख्यातमा नागप्रमाण जाणवां. तथा पृथ्वी आदि पांच सूक्ष्मनां शरीर असंख्याता पण एकठां मळेलां चर्मदृष्टिथी देखाय नहि. तेमज पृथ्वी विगेरे चार बादरनां शरीर असंख्यातां एकठां थयलां चर्मदृष्टिथी देखाय छे. ते समुद्रादिकने विषे उत्सेधांगुल प्रमाण हजार योजनना उंचा पाणीमां पद्मनाल होय छे, तथा आ अढी द्वीपथी बहार एवी लताउ पण होय छे. अहीं यद्यपि सामान्यपणे पृथ्वीकायादिक एकेंद्रिय जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण अंगुलनो असंख्यातमो

जाग मात्र कह्युं छे, तथापि संग्रहिएयादिकने विषे विशेषे करी जाणवामां आवे छे के, अंगुलना असंख्यातमा जागना पण असंख्य नेद छे. एवी रीते ते एकेंद्रियना शरीरनुं प्रमाण कह्युं.

हवे द्वींद्रियादिक विकलेंद्रिय जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण कहे छे–

वारस जोयण तिन्ने,–व गाउआ जोयणं च अणुकमसो ॥ बेइंदियतेइंदिय,–चउरिंदियदेहमुच्चत्तं ॥ २७ ॥

छाया–द्वादश योजनानि त्रीण्ये,–व गव्यूतानि योजनं च अनुक्रमशः ॥

द्वींद्रिय त्रींद्रिय,–चतुरिंद्रियदेहमुच्चत्वेन ॥ २८ ॥

गाथा ३० मीना बुटा शब्दना अर्थ.

वारस–बार.	अणुकमसो–अनुक्रमे.
जोयण–योजन.	वेइंदिय–वेइंद्रीनुं.
तिन्नेव–त्रण.	तेइंदिय–तेइंद्रीनुं.
गाउआ–गाउ.	चउरिंदिय–चौरिंद्रीनुं
जोयणं–एक योजन.	देहं–शरीर.
च–अने.	उच्चत्तं–उंचपणे.

अर्थः–मनुष्यक्षेत्रनी बहार स्वयंभूरमणादिकमां रहेला (वेइंदिय के०) शंखादिक वेइंद्रिय जीवनां शरीर उंचपणे (वारस जोयण के०) बार योजन होय छे, अढी द्वीपनी बहार रहेला (तेइंदिय के०) कर्णशृगाल्यादिक तेइंद्रिय जीवोनां शरीर उंचपणे (तिन्नेव गाउआ के०) त्रण गाउ होय छे, (च के०) तथा अढी द्वीपनी बहार रहेला (चउरिंदिय के०) भ्रमरादिक चौरिंद्रिय जीवोनां (देहमुच्चत्तं के०) शरीर उंचपणे (जोयणं के०) एक योजन होय छे. (अणुकमसो

के०) गाथाना पदना अनुक्रमे एटले बेइंडियने बार योजन वगेरे कहेवा ॥ २७ ॥ ए विकलेंडिय जीवोनां शरीरनुं प्रमाण कह्युं.

हवे पंचेंडिय जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण कहेता थका प्रथम नारकी जीवोनां शरीरनुं प्रमाण कहे छे.

धणुसयपंचपमाणा, नेरइया सत्तमाइ पुढवीए ॥ तत्तो अद्धद्धूणा, नेया रयणप्पहा जाव ॥ २ए ॥

छाया—धनुःशतपंचप्रमाणा, नैरयिका सप्तमायां पृथिव्याम् ततोऽर्धार्धोना, ज्ञेया रत्नप्रभां यावत् ॥ २९ ॥

गाथा २ए मीना छूटा शब्दना अर्थ.

धणु—धनुष्य.
सयपंच—पांचसें.
पमाणा—प्रमाण.
नेरइया—नारकीओ.
सत्तमाइ—सातमी.
पुढवीए—पृथ्वीने विषे.
तत्तो—तेथी.
अद्धद्धूणा—अर्धा अर्धा ओछा
नेया—जाणवुं.
रयणप्पहा—रत्नप्रभा
जाव—ज्यांसुधी.

अर्थः-(सत्तमाइ पुढवीए के०) तमस्तमःप्रभा नामनी सातमी नरकपृथ्वीमां रहेनारा (नेरइया के०) नारकीउ (धणुसयपंचपमाणा के०) पांचसें धनुष्य प्रमाण उंचा ले. एम अनुक्रमे (तत्तो अद्धूणा के०) तेथी अर्ध अर्ध संख्या उणी करवी, एटले अढीसें धनुष्य उंचाइनुं प्रमाण उठी पृथ्वीना नारकीउनां शरीरोनुं होय ले, स-वासो धनुष्य उंचाइनुं प्रमाण पांचमी पृथ्वीना नारकीउनां शरीरोनुं होय ले, साडा वासठ धनुष्य उंचाइनुं प्रमाण चोथी पृथ्वीना नारकी-उनां शरीरोनुं होय ले, सवा एकत्रीश धनुष्य उंचाइनुं प्रमाण त्रीजी पृथ्वीना नारकीउनां शरीरोनुं होय ले, साडा पंदर धनुष्य अने बार अंगुल उंचाइनुं प्रमाण बीजी पृथ्वीना नारकी-उनां शरीरोनुं होय ले, एम अनुक्रमे (जाव रयणप्पहा के०) यावत् रत्नप्रभा नामनी पहेली

पृथ्वीसूधी (नेया के०) जाणवा. एटले पहेली पृथ्वीना नारकीओना शरीरोनी उंचाइनुं प्रमाण पोणाआठ धनुष्य अने छ अंगुल होय छे. एटलुं स्वभाविक देहनुं प्रमाण होय छे, ते कह्युं; पण एनुं वैक्रिय शरीरनुं प्रमाण तो एथी बमणुं होय छे, पूर्वोक्त शरीरप्रमाण उत्सेधांगुलप्रमाणे जाणवुं. ग्रंथकारे उत्कृष्ट अवगाहना (शरीरनीउंचाइ) कही, परंतु जघन्य कही नथी, ते हवे कहे छे. जघन्यथी साते नरकपृथ्वीमां स्वभाविक अने वैक्रिय शरीरनी उंचाइ अंगुलनो असंख्यातमो भाग होय छे, ते पण उत्पत्तिसमयेज होय, पछी न होय. ॥ २ए ॥ एम नारकीउनां शरीरोनुं प्रमाण कह्युं.

हवे गर्भज तथा संमूर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रिय जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण अढी गाथाए करी कहे छे—

जोयणसहस्समाणा, मछा उरगा य गब्भया हुंति ॥ धणुहपुहुत्तं पक्खिसु, भुयचारी गाउअपुहुत्तं ॥ ३० ॥ खयरा धणुहपुहुत्तं, भुयगा उरगा य जोयणपुहुत्तं ॥ गाउयपुहुत्तमित्ता, समुच्छिमा चउप्पया भणिया ॥ ३१ ॥ छच्चेव गाउआइं, चउप्पया गब्भया मुणेयव्वा ॥

छाया-योजनसहस्रमाना, मत्स्या उरगाश्च गर्भजा भवंति ॥ धनुःपृथक्त्वं पक्षिषु, भुजचारी गव्यूतपृथक्त्वम् ॥ ३० ॥ खचरा धनुःपृथक्त्वं, भुजगा उरगाश्च योजन पृथक्त्वम् ॥ गव्यूतपृथक्त्वमात्रा, संमूर्छिमाश्चतुष्पदा भणिताः॥३१ षट् चेव गव्यूतानि, चतुष्पदा गर्भजा ज्ञातव्या ॥ ॥

गाथा ३० मीना छूटा शब्दना अर्थ.

जोयण-योजन.

सहस्स-हजार.

माणा-मान, प्रमाण.

मच्छा-मत्स्य, माछलां.

उरगा-उरःपरिसर्प.

य-वळी.

गब्भया-गर्भज.

हुंति-छे.

(अणुत्तरे के०) पांच अनुत्तरवासी देवलोकमांना देवोनां शरीरोनुं प्रमाण एक हाथनुं होय छे. ए रीते (इक्किक्क परिहाणी के०) एकेक हाथनी हाणी करतां जवुं, ते वारे पूर्वोक्त मान थाय. ए सर्व जीवोनां शरीरोनुं प्रमाण उत्सेधांगुलनी रीते जाणवुं. ॥ ३३ ॥

हवे जीवोना आउखानुं बीजुं द्वार कहे छे.

बावीसा पुढवीए, सत्त य आउस्स ति-
न्नि वाउस्स॥ वाससहस्सा दस तरु,-
गणाण तेउ तिरत्ताऊ॥ ३४ ॥

गाथा ३४ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

बावीसा–बावीश
पुढवीए–पृथ्वीकाय.
सत्त–सात.
य–अने.
आउस्स–अप्काय.
तिन्नि–त्रण.
वाउस्स–वायुकाय.
वास–वर्ष.
सहस्सा–हजार.
दस–दश.
तरु–प्रत्येक वनस्पति.
गणाण–समूह.
तेउ–तेउकाय.
तिरत्ता–त्रण अहोरात्र.
आऊ–आयुष्यवाळा.

अर्थः- (पुढवीए बावीसा के०) पृथ्वीकाय जीवोनुं आयु उत्कृष्टथी बावीश हजार वर्षनुं होय छे, (सत्त आउस्स के०) अप्काय जीवोनुं आयु सात हजार वर्षनुं, (य के०) अने (वाउस्स तिन्नि के०) वायुकाय जीवोनुं आयु त्रण हजार वर्षनुं, (तरुगणाण के०) प्रत्येक वनस्पतिसमूह नुं आयुष्य (दस वास सहस्सा के०) दश हजार वर्षनुं होय छे, अने (तेउ तिरत्ताउ के०) तेजस्काय जीवो उत्कृष्ट आयुःस्थितिमां त्रण अहोरात्रवाळा होय छे, अने ए बधा जीवोनुं जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्त आयुष्य होय छे. उत्कृष्ट अने जघन्य बन्नेनी स्थिति ते मध्यम स्थिति जाणवी. सूत्रकारे पृथ्वीकायना भेदोनी जुदी जुदी उत्कृष्ट स्थिति कही नथी. ते ग्रंथांतरथी कहेवाय छे—श्लक्ष्णा (चीकणी), शुद्धा (कुंवारी) वालुका, मनःशिला, शर्करा, अने शिला पाषाण

अर्थः—(बेइंदियाणं वारसाऊ वासाणि के०) बेइंद्रिय जीवोनुं उत्कृष्टथी बार वर्षनुं आयुष्य होय छे, (तेइंदियाणं तु के०) तेइंद्रिय जीवोनुं आयुष्य (अउणापन्न दिणाइं के०) ओगणपचास दिवसनुं होय छे, अने (चउरिंदीणं तु के०) चतुरिंद्रिय जीवोनुं तो आयुष्य (छम्मासं के०) छ महीनानुं होय छे. तेमज ए सर्व जीवोनुं जघन्यथी पूर्ववत् अंतर्मुहूर्त्तनुं आयुष्य होय छे ॥ ३५ ॥ ए विकलेंद्रियनुं आयुष्य कह्युं.

हवे देवादिक पंचेंद्रिय जीवोनुं उत्कृष्टथी आयुःप्रमाण कहे छे—'

सुरनेरइयाण ठिइ, उक्कोसा सागराणि तित्तीसं॥चउपयतिरियमणुस्सा, तिन्नि य पलिओवमा हुंति॥३६॥ जलयरउर भुयगाणं, परमाऊ होइ पुव्वकोमीउ॥ पक्खीणं पुण भणिओ, असंखभागो य पलियस्स॥ ३७ ॥

छाया-सुरनैरयिकाणां स्थिति,-रुत्कृष्टा सागरा स्त्रयस्त्रिं-शत् ॥ चतुष्पदतिर्यग्मनुष्याणां, तिस्रश्च पल्योपमा भवन्ति ॥ ३६ ॥ जलचरोरगभुजगानां, परमायुर्भवति पूर्वकोटिः ॥ पक्षिणां पुनर्भणितो-ऽसंख्यभागश्च पल्यकस्य ॥ ३७ ॥

गाथा ३६ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

सुर-देवता.
नेरइयाण-नारकी.
ठिइ-स्थिति.
उक्कोसा-उत्कृष्टथी.
सागराणि-सागरोपम.
तित्तीसं-तेत्रीस.
चउपय-चारपगवाळा.

तिरिय-तिर्यंच.
मणुस्सा-मनुष्य.
तिन्नि-त्रण.
य-अने.
पलिओवमा-पल्योपम.
हुंति-होय छे.

गाथा ३७ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

जलयर-जलचर.
उर-उरथी चालनारा.
भुयगाणं-भुजाथी चालनारा.
परमाऊ-उत्कृष्ट आयुष्य
होइ-होय छे.
पुव्वकोडीओ-पूर्व क्रोड.
पक्खीणं-पक्षीओनुं.

पुण-वळी तो, वळी.
भणिओ-कहेलुं छे.
असंखभागो-असंख्यातमो
य-अने.
पलियस्स-पल्योपमनो.

अर्थः–(सुरनेरइयाण ठिई के०) देव अने नारकीउना आयुष्यनी स्थति (उक्कोसा के०) उत्कृष्ट (थी) (तित्तीसं सागराणि के०) तेत्रीश सागरोपम होय ठे. एटलुं आयुष्य पांच अनुत्तर विमानोना देवोनुं तथा सातमी नरकना जीवोनुं उत्कृष्टथी जाणी लेवुं, (य के०) अने (चउ-पय के०) चतुष्पद एटले चारपगवाला (तिरिय के०) तिर्यच जीवोनुं तथा (मणुस्सा के०) सर्व प्रकारना माणसोनुं उत्कृष्टथी (तिन्नि पलिउ-वमा के०) त्रण पल्योपम आयुष्य (हुंति के०) होय ठे. एवा आयुष्यवाला जीवो देवकुर्वादिक क्षेत्रोमां होय ठे. अहीं पल्योपम तथा सागरोपमने विषे सूक्ष्मताथी अथवा विशेषण विशिष्टनुं ग्रहण करवाथी देव तथा नारकीउनुं जघन्यथी आयुष्य दश हजार वर्षनुं होय ठे, अने मनुष्य तथा तिर्यच जीवोनुं जघन्यथी पूर्वनी

पेठे अंतर्मुहूर्त्तनुं आयुष्य होय छे. घणुं करीने सर्वे आराओमां गज, सिंह अने सर्पादिकनु आयु मनुष्यना आयु सरखुं होय, मनुष्यना आयुथी अर्धुं अश्व अने खच्चरादिकनुं होय, मनुष्यना आयुथी आठमा जागनुं आयु घेटां तथा वकरा विगेरेनुं होय, मनुष्यना आयुथी पांचमा जागनुं आयु गो, महिष, उंट अने गधेमां विगेरेनुं होय अने मनुष्यना आयुथी दशमा जागनुं आयु वृक (नहार) अने चित्ता विगेरेनुं जाणवुं. ए रीते मध्यम अने जघन्य पण जाणी लेवुं. अही पल्योपम शब्दथी सूक्ष्म अद्धापल्योपम लेवुं. ते पल्योपमनुं स्वरूप ग्रंथांतरथी जाणवुं. ग्रंथना गौरवना जयथी कह्युं नथी. ॥ ३६ ॥

गर्भज अने संमूर्छिम ए वे प्रकारना (जलयर के०) जे जलचर जीवो छे, (उर के०) उदरथी चालनारा जे सर्पो छे, (जुयगाणं के०) जुजाथी

चालनारा जे नोलिया प्रमुख जीवो ठे, तेठनुं (परमाऊ के०) उत्कृष्टथी आयुष्य (पुव्वकोमीउ के०) पूर्व कोमी (होइ के०) होय ठे. सित्तेर लाख अने ठप्पन हजार कोटी वर्षनो एक पूर्व थाय ठे. एवा एक कोटी पूर्वनुं आयुष्य जाणवुं. (पक्खिणं के०) पक्षीउनुं (पुण के०) तेवी रीतेज (पलिअस्स असंखनागो अ के०) पल्योपमना असंख्यातमा नाग (जेटलुं आयुष्य) (नणिउ के०) कहेलुं ठे. आ गर्नज तिर्यचनुं आयुष्य जाणवुं- आ प्रकरणमां संमूर्छिम स्थलचर तथा खेचरादि पंचेंद्रियोनुं उत्कृष्टथी आयु कह्युं नथी, पण बीजा ग्रंथोमां कहेलुं ठे, ते आ प्रमाणे–'समुछिमपणिंदियथल खयरउरगजुयगजिठ्ठठिइकमसो, वाससहस्सा चुलसी, विसत्तरी तिपन्न बायाला ॥ १ ॥' इति. अर्थ–गोआदि संमूर्छिम स्थलचर — चक अने कागमाविगेरे संमूर्छिम खेचर, ..

उरःपरिसर्प, गृहगोधा (घरोळी) विगेरे भुजपरिसर्प, तेओनी अनुक्रमे उत्कृष्ट आयु चोराशी, बोंत्तेर, त्रेपन अने बेतालीश हजार वर्षोनी छे. हवे सूक्ष्मादि जीवोना आयुष्यनुं प्रमाण कहे छे-

सव्वे सुहुमा साहा,-रणा य संमुच्छि-
मा मणुस्सा य ॥ उक्कोसजहन्नेण,
अंतमुहुत्तं चिय जियंति ॥ ३८ ॥

छाया-सर्वे सूक्ष्माःसाधा,-रणाश्च संमूर्छिमा मनुष्याश्च ॥
उत्कृष्ट जघन्येना,-न्तर्मूहूर्तं चैव जीवंति ॥ ३८ ॥

गाथा ३८ मीना छूटा शब्दना अर्थ

सव्वे-सर्वे.	य-वळी.
सुहुमा-सूक्ष्म.	उक्कोस-उत्कृष्टथी.
साहारणा-साधारण.	जहन्नेणं-जघन्यथी.
य-वली.	अंतमुहुत्तं-अंतर्मुहूर्त्त.
समुच्छिमा-संमूर्च्छिम.	चिय-मात्र.
मणुस्सा-मनुष्य.	जियंति-जीवे छे.

अर्थः-(सव्वे के०) पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय तथा वनस्पतिकाय, ए सर्वे

(सुहुमा साहारणा य के०) सूक्ष्म तथा बीजा साधारण एटले बादर निगोदरूप जे अनंतकाय जीवो छे, ते (य के०) अने (संमुछिमा मणुस्सा के०) संमूर्छिम मनुष्यो जे एकसो ने एक क्षेत्रोने विषे उत्पन्न थयेला गर्भज मनुष्योनांज मल मूत्र तथा वातादिकने विषे उत्पन्न थाय छे, ते विस्तारथी कहे छे–मनुष्य क्षेत्रनी अंदर ४५ लाख योजनमां गर्भज मनुष्योनाज विष्टा, मूत्र, कफ, सिंघाणक (नाकनोमल), वमन, पित्त, शुक्र, स्त्रीरजःअथवा रुधिर, शुक्रपुद्गल परिशाट, निर्जीव कलेवर, नगरनी गटरो तथा स्त्रीपुरुषनो संयोग–ए सर्व स्थानोमा संमूर्छिम मनुष्यो उत्पन्न थाय छे–ते यथा (उक्कोस के०) उत्कृष्ट तथा (जहन्नेणं के०) जघन्यथी (अंतमुहुत्तं चिय के०) एक [illegible] मात्रज (जियंति के०)जीवे छे॥२

उपलां बे द्वारमां जे कह्युं, ते गाथा वडे सूचवे छे-

उंगाहणाउमाणं, एवं संखेवउ समक्खायं ॥ जे पुण इछ विसेसा, विसेससुत्ताउ ते नेया ॥ ३ए ॥

छाया-अवगाहनायुर्मान,-मेवं संक्षेपतःसमाख्यातम् ॥
ये पुनरत्र विशेपा, विशेपसूत्राच्च ज्ञेयाः ॥ ३९ ॥

गाथा ३ए मीना छूटा शब्दना अर्थ.

ओगाहणा-अवगाहना.	पुण-वली.
आउ-आयुष्य.	इच्छ-अहीं.
माणं-प्रमाण	विसेसा-विशेपो, भेदो.
एवं-एवी रीते.	विसेस-विशेप.
संखेवओ-संक्षेपे करी.	सुत्ताउ-सूत्रोथी.
समक्खायं-कह्युं.	ते-ते.
जे-जे.	नेया-जाणी लेवा .

अर्थः-(उंगाहणाउमाणं के०) जेने विषे जीवनी स्थिति होय छे, अथवा जेमां जीव रहे

ठे, तेने अवगाहना कहीए, एवं जे प्रत्येक जीवनुं शरीर तथा आयुष्यनुं प्रमाण एवं के०) एवी रीते (संखेवउ के०) संक्षेपे करी (समक्खायं के०) समाख्यातं एटले कह्युं, परंतु (जे पुण इह्र के०) अत्रे वली जे कांइ देवलोकादिकने विषे प्रतरादिआश्रित (विसेसा के०) विशेष अवगाहना तथा आयुना नेद ठे, (ते विसेससुत्ताउ के०) ते विशेष सूत्र जे संग्रहिणी तथा प्रज्ञापनादिक सूत्रो ठे, तेथकी (नेया के०) जाणी लेवा ॥३ए॥ ए रीते अवगाहना तथा आयुःस्थिति मली वे द्वार कह्यां.

हवे त्रीजुं स्वकायस्थिति द्वार कहे ठे–

एगिंदिया य सवे, असंखउस्सप्पिणी
सकायंमि ॥ उववज्जंति चयंति अ,
अणंतकाया अणंताउ ॥ ४० ॥

छाया–एकेंद्रियाश्च सर्वे ऽसंख्योत्सर्पिण्यः स्वकाये ॥
उपपद्यंते च्यवंतेचा,–नन्तकाया अनंताः ॥ ४० ॥

गाथा ४० मीना बूटा शब्दना अर्थ.

एगिंदिया–एकेंद्रिय.
य–अने.
सव्वे–सर्व.
असंख–असंख्याता.
उस्सप्पिणी–उत्सर्पिणी.
सकायंमि–पोतानी कायाने विषे.
उववज्जंति–उत्पन्न थाय छे.
चयंति–चवे छे.
य–वली.
अनंतकाया–अनंतकायजीव.
अणंताओ–अनंत उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी सुधी.

अर्थः– (सव्वे एगिंदिया के०) पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय अने वनस्पतिकाय, ए जे पांच स्थावर एकेंद्रिय छे, ते सर्व (असंख उस्सप्पिणी के०) असंख्य उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी सुधी (सकायंमि के०) तेज पोतानी कायने विषे (उववज्जंति के०) उत्पन्न थाय छे, (य के०) अने (चयंति के०) मरणने पामे छे.

अर्थात् तेज कायमां उत्पन्न थइने फरी त्यांज नाश पामे छे, (य के०) तथा (अणंतकाया के०) अनंतकाय वनस्पति जीवो जे छे, ते (अणंताउ के०) अनंत उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी सुधी स्वकायमां उत्पन्न थइने तेजकायमां नाश पामे छे ॥ ४० ॥ एवी रीते एकेंद्रिय जीवोनी कायस्थिति कही.

हवे द्वींद्रियादि विकलेंद्रियनी कायस्थिति कहे छे–

संखिज्जसमा विगला, सत्तठ्ठभवा
पणिंदितिरिमणुया ॥ उववज्जंति स-
काए नारयदेवा अ नो चेव ॥ ४१ ॥

छाया–संख्यातसमा विकलाः, सप्ताष्टभवाः पंचेंद्रिय-
तिर्यग्मनुष्याः ॥
उपपद्यंते स्वकाये, नारकदेवाश्च नो चैव ॥ ४१ ॥

गाथा ४१ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

संखिज्जसमा-संख्याता वर्ष सुधी.
विगला-विकलेंद्रिय जीवो.
सत्तट्ठ-सात अथवा आठ.
भवा-भव.
पणिंद्रि-पंचेंद्रिय.
तिरि-तिर्यंच.
मणुया-मनुष्य.
उववज्जंति-उपजे छे.
सकाए-पोतानी कायाने विषे.
नारय-नारकीना जीवो.
देवा-देवो.
नो-नहि; नथी.
य-अने
चेव-निश्चे.

अर्थः-(विगला संखिज्जसमा के०) बेइंद्रिय तेइंद्रिय तथा चारिंद्रिय ए जे विकलेंद्रिय जीवो छे, ते संख्याता वर्ष सुधी (उववज्जंति सकाए के०) उपपद्यंते स्वकाये, एटले स्वकायने विषे उत्पन्न थाय, अने च्यवे छे, तथा (पणिंदितिरि-मणुया के०) पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य ए बे जातिना जीवो ते तेवाज भवपणे (सतट्ठ भवा के०) सात अथवा आठ भव करे छे. साते भव तो उत्कृष्ट संख्याता वर्षवाळा थइ शके छे,

अने उत्कृष्ट असंख्याता वर्षवाळो आठमो भव
थइ शके छे. ते आवी रीते–पर्याप्त संज्ञी मनुष्य
अथवा पर्याप्त संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच निरंतर
अनुक्रमे सात भव मनुष्य अने तिर्यंचना भोग-
वीने जो आठमा भवमां फरीने ते मनुष्य अने
तिर्यंचमां उपजे, तो अवश्य असंख्याता वर्षना
आयुवाळामांज उपजे, अने पछी त्यांथी मरीने
देवोमांज उपजे, त्यार पछी नवमो पण मनुष्य
अथवा तिर्यंच भव थाय परंतु निरंतर न थाय.
एटले आठ भवमां पूर्व कोटी पृथक्त्व अने
त्रण पल्योपम अधिक काल जाणी लेवो, अने
जघन्यथी सर्वत्र कायस्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी जाणी
लेवी. तथा (नारय देवा अ नो चेव के०) ना-
रकी जीवो अने देवो मरण पामीने फरी तेज
गतिमां उत्पन्न थता नथी, एटले नारकी मरी
फरी नारकीमां न उपजे, अने देवता मरी

फरी देवतामां न उपजे. अवश्य एक बे नव बीजी गतिमां करीने पछी ते गतिमां उपजे, तेम वळी देवता मरी नरकमां पण न जाय, अने नारकी मरी देवतामां पण न जाय. ए त्रीजुं स्वकायस्थिति द्वार कह्युं. ॥ १ ॥

हवे चोथुं प्रमाण द्वार कहे छे–

दसहा जियाण पाणा, इंदिउसासाउ-
जोगबलरूवा ॥ एगिंदिएसु चउरो,
विगलेसु छ सत्त अठेव ॥ ४२ ॥
असन्निसन्निपंचिंदि,–एसु नव दस
कमेण बोधव्वा ॥ तेहिँ सह विप्पओगो,
जीवाणं भणए मरणं ॥ ४३ ॥

छाया–दशधा जीवानां प्राणा, इंद्रियोच्छ्वासायुर्योगबलरूपाः ॥
एकेंद्रियेषु चत्वारो, विकलेषु षट् सप्ताष्टैव ॥ ४२ ॥
असंज्ञिसंज्ञिपंचेंद्रि,–येषु नव दश क्रमेण बोद्धव्याः ॥
तैः सह विप्रयोगो, जीवानां भण्यते मरणम् ॥ ४३ ॥

गाथा ४२ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

दसहा–दश प्रकारना.	चलरूवा–चलरूप.
जियाण–जीवना.	एगिंदिएसु–एकेंद्रियने विषे.
पाणा–प्राण.	चउरो–चार.
इंदि–इंद्रियो.	विगलेसु–विकलेंद्रियने विषे.
ऊसास–श्वासोच्छ्वास.	छ–छ.
आउ–आयुष्य.	सत्त–सात.
जोग–योग.	अठ्ठेव–आठ ज.

गाथा ४३ मीना बूटा शब्दना अर्थ.

असन्नि–असंज्ञी.	तेहिं–तेनी.
सन्नि–संज्ञी.	सह–साथे.
पंचिंदिएसु–पंचेंद्रियने विषे.	विप्पओगो–वियोग.
नव–नव.	जीवाणं–जीवने.
दस–दश.	भण्णए–कहेवाय छे.
कमेण–क्रमे करी.	मरणं–मरण.
बोद्धवा–जाणवा.	

अर्थः–(दसहा जियाण पाणा के०) जीवोना दश प्रकारना प्राण होय छे, ते कहे छे, (इंद्रि

के०) इंद्रियो (उसास के०) श्वासोच्छ्वास, (आउ के०) आयु तथा (जोगबलरूवा के०) योगनां बलरूप, एटले स्पर्शनादि पांच इंद्रियो, छठो उच्छ्वास निःश्वास, सातमुं आयु तथा मन, वचन, काय, ए त्रण योगनां त्रण बल मली दश प्राण छे. तेमां (एगिंदिएसु के०) एकेंद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, श्वासोच्छ्वास, आयु तथा कायबल, ए (चउरो के०) चार प्राण होय छे, अने (विगलेसु के०) विकलेंद्रिय एटले द्वींद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, श्वासोच्छ्वास, आयु, कायबल तथा वचनबल, ए (छ के०) छ प्राण होय छे. त्रींद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, श्वासच्छ्वास, आयु, कायबल तथा वचनबल, ए (सत्त के०) सात प्राण होय छे. चतुरिंद्रिय जीवोने स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय, श्वासोच्छ्वास,

आयु, कायबल तथा वचनबल, ए (अहिंद्रि के०) आठ प्राण होय छे. ॥ ४२ ॥

प्रसंगथी असंज्ञी अने संज्ञीनो अर्थथी भेद बताबाय छे–संज्ञा जेने होय, ते संज्ञी कहेवाय, अने जेने संज्ञा न होय, ते असंज्ञी कहेवाय. तेमां पृथ्वी आदि लइ संमूर्छिम पंचेंद्रिय पर्यन्त असंज्ञी अने बीजा पंचेंद्रिया मन पर्याप्ति वडे संज्ञी जाणवा. शंका–प्रज्ञापनामां एकेंद्रियादिने पण आहार, भय, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, ओघ, शोक, ए दश संज्ञा कही छे, तेथी तेओपण संज्ञी गणावा जोइए? ते शंकानुं समाधान करवा माटे कहे छे–दश प्रकारवाळी पण आ संज्ञा ओघसंज्ञापणाथी नानी तथा मोहना उदयथी थवाथी अशुभ छे. आथी ते संज्ञानुं अहीं प्रयोजन नथी. परंतु मोटी तथा विशिष्ट ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयो-

पशमथी थती शुभ मनोज्ञान संज्ञा वडे प्रयोजन छे. अथवा दीर्घकालिकी एटले त्रिकाल विषयना ज्ञानरूप संज्ञा, हेतुवादोपदेशिकी एटले इष्ट अनिष्ट वस्तुमां विचारपूर्वक प्रवृत्ति तथा निवृत्ति जेवडे थाय ते, तथा क्षायोपशमिक ज्ञान थतां सम्यग्दृष्टिने दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा होय. एकेंद्रियादिपांचने ओघसंज्ञा,द्वींद्रियादिने हेतुवादोदेपशिकी, सुर, नारक, तथा गर्भजने दीर्घकालिकी संज्ञा, सम्यग्दृष्टिने दृष्टिवाद संज्ञा अने केवली संज्ञारहित मतिना व्यापारथी रहित होयछे.

(असन्निसन्निपंचिंदिएसु के०) असंज्ञी पंचेंद्रिय तथा संज्ञी पंचेंद्रिय जीवोने (नव दस के०) नव अने दश (कमेण के०) क्रमे करी (वोद्धवा के०) जाणवा. एटले असंज्ञी पंचेंद्रिय जीवोने एक मनोबल होतुं नथी, बाकीना नवे प्राणो होय छे अने संज्ञी पंचेंद्रिय जीवोने दशे

प्राणो ठे. ए प्राण जेने जेटला कह्या ठे, ते जीवने (तेहिं सह विप्पर्ठगो के०) ते प्राणोनी साथे जे वियोग थाय ठे, ते (जीवाणं मरणं जणए के०) जीवनुं मरण कहेवाय ठे. वली ज्यां उपजे, त्यां एक आयु तो पूर्वना जवनु बांधेलुं होय, बाकी बीजा सर्व नवा प्राण अने नवी पर्याप्ति उपजती वेलाए बांधे. अहीं देव, नारकी, गर्भज तिर्यंच तथा मनुष्य ए जीवो संज्ञी पंचेंद्रिय कहेवाय ठे; अने संमूर्छिम तिर्यग् तथा संमूर्छिम मनुष्य असंज्ञी पंचेंद्रिय कहेवाय ठे. तेठमां संमूर्छिम मनुष्यो तो जाषारूप वाग्बलादिके करी रहित होवाथी तेठ सात तथा आठ प्राणवाला कह्या ठे ॥ ४३ ॥

अहीं एवी आशंका उत्पन्न थाय ठे के, जीवने प्राण वियोगरूप जे मरण कह्युं, ते केटला काल सुधी थया करे ठे ? एना निरासार्थ उत्तर कहे ठे–

क्रमप्राप्त योनिद्वार आगळ कहेवाशे, ते॰
प्रथम आ संसारमां स्वरूपने ग्रहण कर॰
जीवनो स्वभाव कहे छे–

एवं अणोरपारे, संसारे सायरंमि
भीमंमि ॥ पत्तो अणंतखुत्तो, जीवेहिं
अपत्तधम्मेहिं ॥ ४४ ॥

छाया–एवमणोरपारे, संसारे सागरे भीमे ॥
प्राप्तमनंतशो, जीवैरप्राप्तधर्मैः ॥ ४४ ॥

गाथा ४४ मीना छूटा शब्दना अर्थ.

एवं–ए प्रकारे.
अणोरपारे–पाररहित.
संसारे–संसाररूप.
सायरंमि–समुद्रने विषे.
भीमंमि–महा भयंकर.
पत्तो–प्राप्त थाय छे.
अणंत–अनंती.
खुत्तो–वार.
जीवेहिं–जीवोने.
अपत्त–नहीं पामेला.
धम्मेहिं–धर्मने.

अर्थः–(अपत्तधम्मेहिं के॰) जेउने धर्मनी
प्राप्ति थइ नथी, एवा (जीवेहिं के॰) जीवोए

(एवं के०) पूर्वे कही आज्ञा तेम श्रा (अणोरपारे के०) पाररहित एटले जेनी श्रादि पण नथी, श्रने श्रंत पण नथी, एवा (जीमंमि के०) महा नयंकर (संमारे सायरंमि के०) संसाररूप समुद्रने विषे (अणंतखुत्तो के०) श्रनंती वार प्राण-वियोगरूप मरण (पत्तो के०) प्राप्त करायुं ठे॥४४॥ ए चोथुं प्राणद्वार कह्युं.

एटले जे जीव धर्म नथी पाम्या, ते जीव एकेकी योनिने विषे श्रनंती श्रनंती वार मरण जीवन प्रत्ये करे ठे. योनि एटले जे स्थानमां घणा जीवोनो एक वर्ण, एक गंध, एक रस, एक स्पर्श, एटलां वानां सरखां वरोवर होय, ते सर्व जीवनी एक योनि कहीए. ते योनिउ केटली ठे, ते सर्व जातिना जीवोनी जूदी जूदी संख्याए श्रागली गाथाए कहे ठे.

हवे पांचमुं योनिद्वार कहे ठे—

नथी, तेने अनादिनिधन कहीए. ए (अणाइ निहणे काले के०) अनादि अनंत कालने विषे (जिणवयण मलहंता जीवा के०) हितोपदेशरूप जिनवचनने जे जीवो पाम्या नथी, तेड (जोणि के०) चोराशी लाख संख्यावाली जे योनि, तेणे करी (गहणंमि के०) महा गहन-दुख देनारो तथा (भीसणे के०) भयने देनारो (इत्र के०) अहीं वर्णव्यो एवो जे आ संसार, तेने विषे (भमिया के०) अतीत कालने विषे भटकेला छे, अने फरी (भमिहंति चिरं के०) आगल आगमिक कालमां पण घणुं भ्रमण करशे ॥ ४९ ।

हवे ग्रंथकार पोताना नामनी सूचना करता छता धर्मोपदेश कहे छे—

ता संपइ संपत्ते, मणुअत्ते दुल्लहे य सम्मत्ते ॥ सिरि संति सूरिसिठे, करेह भो उज्जमं धम्मे ॥ ५० ॥

छाया-तावत्संप्रति संप्राप्ते, मनुजत्वे दुर्लभे च सम्यक्त्वे ॥
श्रीशांतिसूरिशिष्टं, कुरुत भो उद्यमं धर्मे ॥ ५० ॥

गाथा ५० मीना छूटा शब्दना अर्थ.

ता-ते कारण माटे.	संति-शांति, रागादिकनो उपशम.
संपइ-सांप्रत काले.	सूरि-सूरि, पूजवायोग्य.
संपत्ते-प्राप्त थयुं.	सिट्ठे-शिष्ट, उपदेश करेला.
मणुअत्ते-मनुष्यपणुं.	करेह-करो.
दुलहे-दुर्लभ.	भो-हे भव्यजीवो.
य-अने.	उज्जमं-उद्यम.
सम्मत्ते-सम्यक्त्व.	धम्मे-धर्मने विषे.
सिरि-श्री, ज्ञानादि लक्ष्मी.	

अर्थः-(ता के०) ते पूर्वोक्त कारण माटे (भो के०) हे भव्यजीवो ! (संपइ के०) सांप्रत आ समयने विषे दश दृष्टांते करी (दुल्लहे के०) दुर्लभ एवुं जे आ (मणुअत्ते के०) मनुष्यपणुं, ते (संपत्ते के०) प्राप्त थये अने ते (य के०) वळी (सम्मत्ते के०) तेमां पण दुर्लभ जिनोक्त तत्त्वत्रयरुचीरूप सम्यक्त्व प्राप्त थये छते (सिरिसं-

तिसुरिसिठे के०) श्री एटले ज्ञानादि लक्ष्मी, शांति एटले रागादिकनो उपशम, एउंए करी जे सुरि एटले पूज्य एवा श्रीतिर्थंकर तथा गणधर तेउं शिष्टे उपदेश करेला (धम्मे उज्जमं करेह के०) धर्मने विषे उद्यम करो ॥ ५० ॥

आ पद्यमां कविए पोतानुं नाम सूचव्युं छे, ते आवी–रीतेश्रीशांतिसूरि उपदेश करे छे के, शिष्टे एटले उत्तम पुरुषोए आचरण करेला धर्मनेविषे उद्यम करो. एवो अन्वय करवो अथवा श्रीशांतिसूरिए करेला जगवद्वचनानुसारे धर्मोपदेशमां उद्यम करो.

हवे आ ग्रंथ सिद्धांतमांथी काढेलो छे, एम कहे छे-

एसो जीववियारो, संखेवरुईण जाणणाहेऊ ॥ संखित्तो उद्धरिउं, रुद्दाउं सुयसमुद्दाउं ॥ ५१ ॥ इति ॥

छाया–एष जीवविचारः, संक्षेपरुचीनां ज्ञानार्थम् ॥
संक्षिप्त उद्धृतो, रुद्रात्श्रुतसमुद्रात् ॥ ५१ ॥ इति ॥

गाथा ५१ मीना जूदा शब्दना अर्थ

एसो-ए.	संखित्तो-संक्षेपथी.
जीवविचारो-जीवविचार.	उद्धरिओ-उद्धार कर्यो छे.
संखेवरुइण-संक्षेपरुचिवंतने.	रुद्दाओ-अतिशयविस्तारवाळा.
जाणणाहेउं-जाणवाने अर्थे	सुयसमुद्दाओ-श्रुतसमुद्रथी.

अर्थः-(एसो के०) ए जे (जीवविचारो के०) जीवविचार कह्यो, ते (संखेवरुइण के०) संक्षेपरुचि एटले स्वल्प मतिवाळा जीवोने (जाणणाहेउं के०) जाणवाने अर्थे (रुद्दाउ के०) जेना विस्तारनुं ग्रहण थइ शके नहीं एवा (सुयसमुद्दाउ के०) श्रुतसमुद्रथकी (संखित्तो उद्धरिउ के०) संक्षेपथी उद्धार करीने आ निबंध कर्यो छे. एथी आ सर्व जे कांइ कह्युं, ते पोतानुं मनःकल्पित कह्युं नथी; परंतु सिद्धांतोमांथी उद्धार करीने कह्युं छे, एवी सूचना करी ॥५१॥

इति श्रीजीवविचारप्रकरणं प्राकृतव्याख्यासहितं संपूर्णम् ॥

लिक वायरो, मोटो वायरो, शुद्ध वायरो, गुंजारव करे ते वायरो, घनवात, तनुवात आदि देइ वातकायना भेद जाणवा. ४

५ ॥ वनस्पतिकायना बे भेद कहे छे ॥

१ साधारण वनस्पति. २ प्रत्येक वनस्पति

१ ॥ साधारण वनस्पतिना भेद कहे छे ॥

सर्व जातनां कंद, सर्व जातना अंकुरा, सर्व जातनां कुंपल, पांच जातनी फुगी, सेवाल, भूमिफोडा, लीलुं आदु, लीली हलदर ने लीलो कचुरो, गाजर, मोथ, वथुलानी भाजी, थेग, सर्व जातना पाला, कोमल फल, सर्व गुप्त छे शिरा, सांध, पर्व जेनां एवां, थुहर, कुंवार, गुगल गलो प्रमुख छेद्या थकी उगे तेने साधारण वनस्पति कहीए.

२ ॥ प्रत्येक वनस्पतिना भेद कहे छे ॥

---

१ अथवा कुवकार.

एक शरीरमां एक जीव होय जेने विषे तेने प्रत्येक वनस्पति कहीए. ते फल, फूल, ठाल, काष्ठ, मूल, पान ने बीज–ए सात स्थानके एक एक जीव होय तेने प्रत्येक वनस्पति कहीए. ए पांच स्थावरना नेद कह्या.

॥ बेइंद्रियना नेद कहे छे ॥

शंख, कोमीर्ठ, गंमोला, जलो, चंदनक एटले स्थापनाचार्य, अलसीआ, लालीआ, लाकमाना कीमा, कीरमीआ, पूरा ए आदि देइ बेइंद्रिय जीव जाणवा.

॥ तेइंद्रियना नेद कहे छे ॥

कानखजुरा, मांकण, जु, कीमी, उधेइ, मंकोमा, इयल, घीमेल, सावा, गींगोमा, गधइआ, ठाणना कीमा, विष्टाना कीमा, धनेरां, कुंथुआ, गोपालीक, मेहना मामा आदि देइ तेइंद्रिय नेद जाणवा.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ [illegible] कहे छे ॥

[illegible] समुद्र[illegible] ने [illegible].

मनुष्यनी मुख्य त्रण जाति छे. तेनी उत्तर जाति १०१ मनुष्यक्षेत्र आश्री.

१५ पंदर कर्मभूमि. ३० त्रीश अकर्मभूमि. ५६ छप्पन अंतरद्वीप.

॥ हवे पंदर कर्मभूमि कहे छे ॥

पांच भरत. पांच ऐरवत. पांच महाविदेह.

॥ हवे त्रीश अकर्मभूमि कहे छे ॥

१ पांच हेमवंत क्षेत्र. २ पांच हिरण्यवंत क्षेत्र. ३ पांच हरिवर्ष क्षेत्र. ४ पांच रम्यक क्षेत्र. ५ पांच देवकुरु क्षेत्र. ६ पांच उत्तरकुरु क्षेत्र.

॥ हवे छप्पन अंतरद्वीप कहे छे ॥

चुलहेमवंत पर्वत अने शिखरी पर्वत—ए बे पर्वतनी पूर्वे ने पश्चिमे लवण समुद्रमां बे बे दाढाउ नीकली छे; एटले बंने पर्वतनी बंने दिशिनी आठ दाढाउ थइ. ते एक एक दाढा उपरे सात सात द्वीप छे, एटले आठ दाढा उपर छप्पन अंतरद्वीप थया.

ए प्रमाणे मनुष्यना १०१ भेद जाणवा.

॥ देवताना चार भेद कहे छे ॥

१ दश भवनपति. २ आठ व्यंतर तथा वाणव्यंतर. ३ पांच ज्योतिषी. ४ बे वैमानिक.

॥ दश भवनपतिनां नाम कहे छे.

१ असुरकुमार. २ नागकुमार. ३ सुवर्णकुमार. ४ विद्युत्कुमार. ५ अग्निकुमार. ६ द्वीपकुमार. ७ उदधिकुमार. ८ दिक्कुमार. ९ वायुकुमार. १० स्तनितकुमार.

॥ आठ व्यंतर तथा वाणव्यंतरना भेद कहे छे ॥

१ पिशाच. २ भूत. ३ यक्ष. ४ राक्षस. ५ किंनर. ६ किंपुरुष. ७ महोरग. ८ गंधर्व.

१ अणपन्नी. २ पंचपन्नी. ३ इसिवादी. ४ भूतवादी. ५ कंदीत. ६ महाकंदीत. ७ कुष्मांड. ८ पतंग.

॥ ज्योतिषीना पांच भेद कहे छे.

१ चंद्र. २ सूर्य. ३ ग्रह. ४ नक्षत्र. ५ तारा.

॥ वैमानिकना बे भेद कहे छे.

१ कल्प–ते बार देवलोक. २ कल्पातीत–ते नव ग्रैवेयक ने पांच अनुत्तर विमान.

॥ कल्प ते बार देवलोकनां नाम कहे छे ॥

१ सौधर्म. २ ईशान. ३ सनत्कुमार. ४ माहेंद्र. ५ ब्रह्म. ६ लांतक. ७ शुक्र. ८ सहस्रार. ९ आनत. १० प्राणत. ११ आरण. १२ अच्युत. ॥ कल्पातीत ते नव ग्रैवेयक ने पांच अनुत्तर विमान ॥

॥ नव ग्रैवेयकनां नाम कहे छे ॥

१ सुदर्शन. २ सुप्रतिबंध. ३ मनोरम. ४ सर्वतोभद्र. ५ विशाल. ६ सुमनस. ७ सौमनस. ८ प्रीतिकर. ९ आदित्य.

॥ पांच अनुत्तर विमाननां नाम कहे छे ॥

१ विजय. २ वैजयंत. ३ जयंत. ४ अपराजित. ५ सर्वार्थसिद्ध.

॥ ए संसारी जीवोना भेद कह्या ॥

॥हवे सिद्धना पंदर भेद कहे छे ॥

तीर्थसिद्ध, अतीर्थसिद्ध आदि देइ सिद्धना पंदर भेद जाणवा.

८ जीवनुं स्वरूप कह्युं.

॥ हवे पांच द्वारनां नाम कहे छे ॥

१ शरीरनुं द्वार. २ आउखानी स्थितिनुं द्वार. ३ पोतानी कायमां रहे तेनुं द्वार. ४ प्राणनुं द्वार. ५ योनिनुं द्वार.

१ ॥ हवे शरीरनुं द्वार कहे छे ॥

सर्व एकेंद्रियनुं अंगुलना असंख्यातमा भागनुं शरीर होय, पण प्रत्येक वनस्पतिनुं हजार योजनथी अधिक शरीर जाणवुं.

बेइंद्रियनुं बार योजननुं शरीर, तेइंद्रियनुं त्रण गाउनुं शरीर, चोरिंद्रियनुं एक योजननुं शरीर.

पांचसो धनुष्यनुं शरीर सातमी नारकीनुं, पछी अर्ध अर्ध ओछुं करीए, त्यारे पहेली नारकीनुं पोणा आठ धनुष्य ने छ आंगलनुं शरीर जाणवुं.

गर्भज मछ ने उरःपरिसर्पनुं हजार योजननुं शरीर जाणवुं.

पक्षीनुं धनुष्य पृथक्त्व एटले बेथी नव धनुष्यनुं शरीर जाणवुं.

भुजपरिसर्पनुं गाउ पृथक्त्व शरीर होय.

॥ ए शरीरनुं मान गर्भजनुं जाणवुं ॥

॥ संमुर्छिमनुं शरीरमान कहे छे ॥

खेचर पंखीनुं तथा भुजपरिसर्पनुं धनुष्य पृथक्त्व शरीर जाणवुं.

उरःपरिसर्पनुं योजन पृथक्त्व शरीर जाणवुं. संमूर्छिम चतुष्पदनुं गाउ पृथक्त्व शरीरमान जाणवुं.

॥ गर्भज ॥

चतुष्पदनुं छ गाउनुं शरीर होय.

मनुष्यनु त्रण गाउनुं शरीर होय.

भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिकमां सौधर्म ने ईशान ए बे देवलोक सुधीना देवतानुं सात हाथनुं शरीर जाणवुं.

त्रीजे चोथे छ हाथनुं शरीर.

पांचमे छठे पांच हाथनुं शरीर.

सातमे आठमे चार हाथ; नवमे, दशमे, अग्यारमे, बारमे ए चार देवलोके त्रण हाथनुं शरीर; नव ग्रैवेयके बे हाथनुं शरीर; पांच अनुत्तर विमाने एक हाथनुं. ए शरीरनुं मान जाणवुं.

२ ॥ आउखानुं मान कहे छे ॥

पृथ्वीकायनुं बावीश हजार वर्ष, अप्कायनुं सात हजार वर्ष, तेउकायनुं त्रण अहोरात्रि, वाउकायनुं त्रण हजार वर्ष अने वनस्पतिनुं दश हजार वर्षनुं आउखुं जाणवुं.

बेइंद्रियनुं बार वर्ष.

तेइंद्रियनुं ओगणपचास दिवस.

चोरिंद्रियनुं छ मासनुं.

देवता अने नारकीनुं तेत्रीश सागरोपम, चतुष्पद, तिर्यंच अने मनुष्यनुं त्रण पल्योपमनुं आउखुं.

जलचर, उरःपरिसर्प, भुजपरिसर्प—एओनु उत्कृष्ट पूर्व कोडीनुं आउखु जाणवुं.

पक्षीनुं पल्योपमना असंख्यातमा भागनुं आयुष्य जाणवुं.

सर्व सूक्ष्म तथा साधारण वनस्पति अने संमूर्छिम मनुष्य—एओनुं जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्तनुं आउखुं होय.

॥हवे संमूर्छिमनुं आयुष्य कहे छे ॥

जलचर संमूर्छिमनुं पूर्व क्रोड वर्ष, स्थलचरनुं चोराशी हजार वर्ष, खेचरनुं बहोंतेर हजार वर्षनुं आयुष्य, उरःपरिसर्पनुं त्रेपन हजार वर्षनुं आयुष्य, भुजपरिसर्पनुं बेंतालीश हजार वर्षनुं आयुष्य. एवी रीते आयुष्यनुं मान जाणवुं.

३ ॥ हवे कायनी स्थितिनुं द्वार कहे छे ॥

एकेंद्रिय असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी सुधी पोतानी कायमां रहे.

अनंतकाय अनंती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी सुधी पोतानी कायमां रहे.

बे इंद्रिय, तेइंद्रिय तथा चोरिंद्रिय ए त्रणे विकलेंद्रिय संख्यातां वर्ष सुधी रहे.

मनुष्य तथा तिर्यंच सात आठ नव सुधी रहे.

नारकी मरी नारकी न थाय.

देवता मरी देवता न थाय.

४ ॥ हवे दश प्राणनुं द्वार कहे छे ॥

१ स्पर्शनेंद्रिय.	६ श्वासोच्छ्वास.
२ रसनेंद्रिय.	७ आउखुं.
३ घ्राणेंद्रिय.	८ मनबल.
४ चक्षुरिंद्रिय.	९ वचनबल.
५ श्रोत्रेंद्रिय.	१० कायबल.

ए दश प्राण जाणवां.

एकेंद्रियने चार प्राण.

बेइंद्रियने छ प्राण.

तेइंद्रियने सात प्राण.

चौरिंद्रियने आठ प्राण.

असंज्ञी पंचेंद्रियने नव प्राण.

संज्ञी पंचेंद्रियने दश प्राण.

५ ॥ हवे योनिनुं द्वार कहे छे॥

सात लाख पृथ्वीकाय.

सात लाख अप्काय.

सात लाख तेउकाय.

सात लाख वाउकाय.

दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय.

चौद लाख साधारण वनस्पतिकाय.

बे लाख बेइंद्रिय.

बे लाख तेइंद्रिय.

बे लाख चौरिंद्रिय.

चार लाख देवता.

चार लाख नारकी.

चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय.

चौद लाख मनुष्यना भेद.

ए सर्व मली सर्व जीवोनी चोराशी लाख जीवायोनि थाय.

सिद्धना जीवोने देह नथी, आयु नथी, कर्म नथी, प्राण नथी, योनि नथी.

ए सिद्धना जीवोनी सादि अनंत स्थिती जाणवी.

इति जीवविचार प्रकरणना

टुटा बोलो समाप्त.